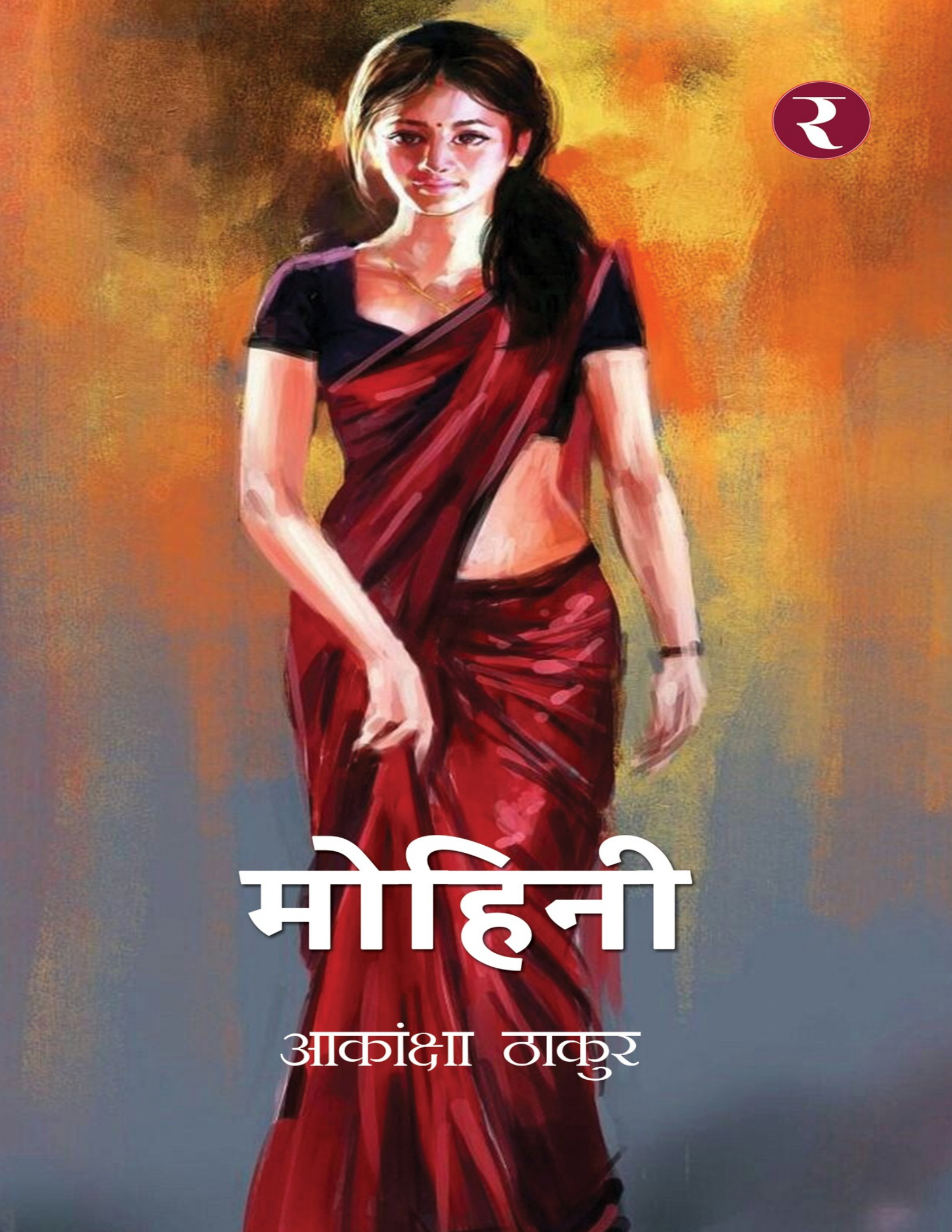

मोहिनी

आकांक्षा ठाकुर

मोहिनी

आकांक्षा ठाकुर

राजमंगल प्रकाशन
An Imprint of **Rajmangal Publishers**

ISBN : 978-9390894406

Published by :

Rajmangal Publishers

Rajmangal Prakashan Building,
1st Street, Sangwan, Quarsi, Ramghat Road
Aligarh-202001, (UP) INDIA

Cont. No. +91- 7017993445

www.rajmangalpublishers.com

rajmangalpublishers@gmail.com

sampadak@rajmangalpublishers.in

प्रथम संस्करण : फरवरी 2021
प्रकाशक : राजमंगल प्रकाशन
राजमंगल प्रकाशन बिल्डिंग, 1st स्ट्रीट,
सांगवान, क्वार्सी, रामघाट रोड,
अलीगढ़, उप्र. – 202001, भारत
फ़ोन : +91 - 7017993445

First Published : Feb. 2021
eBook by : Rajmangal ePublishers (Digital Publishing Division)
Copyright © आकांक्षा ठाकुर

This is a work of fiction. Names, characters, businesses, places, events, locales, and incidents are either the products of the author's imagination or used in a fictitious manner. Any resemblance to actual persons, living or dead, or actual events is purely coincidental. This book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the publisher's prior consent in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser. Under no circumstances may any part of this book be photocopied for resale. The printer/publishers, distributer of this book are not in any way responsible for the view expressed by author in this book. All disputes are subject to arbitration, legal action if any are subject to the jurisdiction of courts of Aligarh, Uttar Pradesh, India

शुक्रिया, उन सभी लोगों का जिन्होंने मुझ पर भरोसा जताए रखा।
यह कहानी बहुत कुछ मेरी, आपकी और काफी कुछ मोहिनी की है।

प्रस्तावना

कुछ वर्षों पहले मैं गर्मी की छुट्टियों में दिल्ली से बरेली जा रही थी। मैं ट्रेन के इंतज़ार में स्टेशन पर बैठी थी कि मेरे पास वाली जगह पर मोहिनी आ कर बैठ गई। कुछ जागी कुछ खोई, वो मोहिनी अपनी ही धुन में थी। हल्की रबर से बंधे बाल,उसके गालों को छू कर बार बार उसका ध्यान अपनी तरफ खींच रहे थे। देखने में आकर्षक वो अपनी ही किसी दुनिया को डायरी पर उतार रही थी। अचानक ट्रेन आ गई और वो अपने जीवन की वो खिड़की वहीं छोड़ गई। मैं डायरी देने के लिए उसके पीछे तो भागी मगर तब तक वो जा चुकी थी।

मेरा सफ़र चार घंटे का था और मैंने टाइम पास के लिए उस डायरी को पढ़ने की सोची। मोहिनी ने अपने जीवन के सारे ज़ख्म, लड़ाई, निराशाओं को महज कुछ पन्नों में समेट रखा था। उस डायरी को पूरा पढ़ने पर मुझे एहसास हुआ हम सभी अपने जीवन में कभी ना कभी मोहिनी जरूर रहें है। कभी मोहिनी हमारी कोई सहेली होती है तो कभी मोहिनी हमारी पड़ोसी होती है। नाम चाहे जो हों मगर अलग अलग मोहिनी की कहानी एक ही होती है। होंठो पर हंसी की चादर से आंखों में बैठी उदासी को छुपाने का लंबा तजुर्बा। दमन का यह सिलसिला अक्सर इतना लंबा और पुराना होता है कि अगर हम मोहिनी को बचाना भी चाहे तो वहां बचाने के लिए सच में कुछ बचता ही नहीं है।

अपनी ख्वाहिशों, अरमानों का गला घोंटकर शादी की हर परीक्षा का इम्तेहान देने वाली मोहिनी, क्या हो जब विद्रोह का बिगुल फूंक दे? क्या हो जब आपके अपने समाज में रहने वाली आदर्श नारी की प्रतिमा, मोहिनी उन्हीं आदर्शों से बगावत कर दे? क्या आप उस शोर से

कान बंद कर लेंगे या उसका साथ देंगे ? क्या मोहिनी सच में क्रांति कर पाएगी? क्या मोहिनी के परिवारजन अपने आदर्शों का यूं दहन होने देंगें या बाकी मोहिनी की तरह इस मोहिनी का भी शंखनाद विफल हो जाएगा। क्या मोहिनी खुद को उस आग से बचा पाएगी या उसकी प्रज्वलित अग्नि उसे ही भस्म कर देगी?

जब इन्हीं द्वंद और अंतर युद्ध को भेदती हुईं मोहिनी संसार से भिड़ने का बीड़ा उठाती है तो संसार की हार निश्चित होती है लेकिन जब उससे लड़ने का मकसद ही छीन जाता है तो वो खुद से हार जाती है। कभी ना हार मानने वाली मोहिनी अंततः सच में हार जाएगी क्या?

~~

एक सन्देश पाठकों के नाम

यह मेरी पहली कहानी थी। आप यहाँ तक आये हैं तो उम्मीद करती हूँ आपको यह किताब ज़रूर पसंद आयी होगी लेकिन यह भी हो सकता यह कहानी आपकी अपेक्षाओं पर उतनी खरी न उतर पायी हो। मुझसे बहुत लोगों ने पूछा कि मैंने हिंदी को ही साहित्यिक भाषा के रूप में क्यों चुना ? मैंने मोहिनी कि कहानी को अंग्रेजी में क्यों नहीं कहा या फिर कि मैंने शादी जैसे पवित्र रिश्ते के खिलाफ ही क्यों लिखा। मेरे पास या किसी भी लेखक के पास ऐसे सवालों के कोई जवाब नहीं होते।

मोहिनी की कहानी अभी काफी अधूरी है। मोहिनी ने अपने अतीत के हिस्से किसी से साझा तो कर दिए है तो क्या अब वो उन्हें भूल जायगी। उसने रवि को अपना लिया है मगर किसी भी व्यक्ति को अपने जीवन का हिस्सा बनाना इतना आसान नहीं होता। प्रशांत की मोहिनी के जीवन में वापसी कुछ उथल पुथल तो ज़रूर ले कर आएगा। प्रशांत का यूँ अचानक दरवाज़े पर हाज़िर होने से रवि के जीवन में क्या बदलाव ला पाएगा। क्या हर रिश्ते की तरह मोहिनी का रवि से रिश्ता भी खोखला हो जायगा?

इन्हीं सवालों के जवाब आप और हम मोहिनी के जीवन की अगली कड़ी में ढूंढेंगे और मैं उस कड़ी में आपकी हर साहित्यिक आशा पर खरा उतरने का वादा करती हूँ।

धन्यवाद

~~

अनुक्रमणिका

शीर्षक

बारिश
अतीत के धागे
चाय
तोहफ़ा
दामाद
जन्मदिन
बियोनिका
घूँघट
सबक
ज़ख्म
सफ़र
इलाज़
माँ
समोसे
ससुराल
हादसा
अज़नबी

~~

बारिश

"हे भगवान। ये बिन मौसम बरसात! आपको भी अलग मस्ती सूझ रही है।" मोहिनी ने बड़बड़ाते हुए छाता खोला।

मोहिनी 30 साल की थी। बैंक ऑफ इंडिया में मैनेजर के पद पर कार्यरत थी। उसे यूं तो लगभग डेढ़ साल हो गए थे बरेली में रहते हुए पर ना जाने क्यूं उसे अब भी यह शहर नया ही लगता था। उसकी खुद की ज़िन्दगी का भी कुछ यही फलसफा था। अपनी ज़िन्दगी की खुद और एकमात्र नायिका होते हुए भी उसे कभी दिल से अपनी कामयाबी का यकीन नही हुआ।

"ऑटो!" मोहिनी चीखी। उसकी चीख की आवाज़ से हो सकता था कि हवाई जहाज आकस्मिक रुक जाता पर ऑटो ड्राइवर की बात ही अलग पड़ जाती है। जब ऑटो वालों को रुकना नहीं होता तो यह ऑटो सड़क पर दौड़ाते ही क्यूं है? मन ही मन बड़बड़ाते हुए चलने लगी।

जब वो बैंक पहुंची तो उसका हुलिया कुछ अलग हो गया था। कपड़ों पर कीचड़ के धब्बे, भीगे बाल पर चेहरा तो अब भी मलिन न हो पाया। हुलिया ना सही पर चेहरे की चमक अलग ही रौब बनाने को होती थी उसकी।

"उफ्फ!" झुंझलाते हुए उसने कंप्यूटर ऑन किया और फ़ाइल उलटने लगी।

"मैडम! आपकी कॉफी।" अनुज की आवाज़ से उसका ध्यान टूटा और उसकी नज़र अनुज की लाल फ़ाइल पर गई।

अनुज बैंक में क्लर्क और तहजीब से करीब करीब मुफ्तखोर था। उसके हुनर का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता था कि पिछले 3 साल सालों में उसने इतने लोगों के लोन बिना कुछ ठोस कार्यवाही के पास कराए थे कि वो अकेले ही बैंक बंद कराने में सक्षम थे।

"अनुज, कॉफी का शुक्रिया लेकिन मैं यह फाइल पास नहीं कर सकती।" सिस्टम अब भी ऑन नहीं हुआ था। मोहिनी को याद आया कि उसे विंडोज दोबारा इंस्टॉल करनी थी।

"मैडम! मैं कर देता हूं। आप क्यों परेशान होंगी।" अनुज ने ज़रूरत से ज्यादा मीठे स्वर को छेड़ा।

"नहीं अनुज। मैं कर लूंगी। तुम्हारा वीकेंड कैसा गया?"

प्लीज़ मत बताना, प्लीज़ मत बताना उसने मन ही मन विनती की पर तब तक अनुज शुरुआत कर चुका था और उसने अपना माथा पकड़ लिया।

"अरे मैडम, क्या बताएं, इतना शानदार था बस क्या कहें। हमारे दोस्त सोनू ने रिसॉर्ट खोला है। गिप्पी आया था ओपनिंग में। गिप्पी को नहीं जानती आप? गिप्पी ग्रेवाल?" अनुज का जोश अब तक चौदवे आसमान पर सावन के झूलों के हिचकोले खा रहा था और मोहिनी को इसी बात पर चक्कर आ रहे थे। इससे पहले वो हां या नहीं के तौर पर उसके सवाल को सहूलियत देती, वो बोला- "वो गबरू वाला। क्या मस्त गाता है मैडम!

पता है रिजॉर्ट का नाम बेयोनिका है, पता है कैसे? बेयोंसे और अनुनिका के जोड़ से। मैडम पता है अनुनिका सोनू की अध्यापिका थी"

"वो मुझे कॉन्फ्रेंस के लिए जाना है मैं आकर पक्का तुम्हारी बात पूरी करूंगी।" अनुज को रोकने का मौका ना देते हुए ऑफिस के बाहर निकलने लगी।

रूम दूसरी मंज़िल पर था। सीढ़ियां चढ़ते हुए उसे ख्याल आया कि उसने कुछ साल पहले कभी सोचा ही नहीं था वो इस डिब्बे को चलाना भी सीख लेनी वो भी इस हद्द तक। उसे तो अपनी ज़िंदगी इतनी आगे महसूस हुई ही नहीं कभी।

मोहिनी ने सर उठा कर देखा तो घड़ी की सुइयां छः और खिड़की की बूंदे तेज़ बारिश को दिखा रही थीं। जहां जाए भूखा, वहीं पड़े सूखा।

घर पहुंच कर दरवाज़े का लॉक खोला तो लगा किसी जन्नत में आ गई है। इतना अपना सा लगता था उसे यह किराए का घर।

जब इस शहर में आई थी तो जानती ही किसे थी मोहिनी। बस करुणा का नंबर था वो भी बरसों पुराना, किस्मत का खेल था कि वो लग गया। वरना राम जाने क्या होता। यह घर करुणा के पति ने दिलाया था वरना दो घंटे में बरेली में भीख भी नहीं मिलती। मोहिनी ने घर बिना देखे एडवांस बुक कर दिया था। घर आकर उसके दिल ने जो सुकून की सांस ली थी वो उसे आज भी याद है। दरवाजे से घुसते ही हाॅल था जहां सोफ़ा था, कुछ बाजू में किचेन काउंटर और दो लोगों के लिए डायनिंग टेबल भी सजी थी। टीवी भी लगी थी हॉल में जो उसने गिनती के बार चलाईं हैं। एक मास्टर बेडरूम था और थोड़ा छोटा बेडरूम था। दोनों से लगी हुई एक बालकनी थी। बालकनी में खड़े होने पर पार्क में बच्चे दिखते थे। किराया कुछ ज्यादा ही था इसका लेकिन उसके पास और कोई चारा भी तो नहीं था। मरता क्या न करता!

कपड़े बदल कर वो बालकनी में आ गई। आसमान से गिरने वाली बूंद मोहिनी को अपनी उसकी याद दिला रही थी। फर्क था तो बस इतना कि इन बूंदों की तरह कीचड़ में गिर कर उसने हार ना मानी और वह फिर उठ खड़ी हुई।

ना चाहते हुए भी मोहिनी को अपने भूत के पुराने खुरदुरे रास्ते याद आ ही जाते थे जैसे कल की ही बात थी।

मोहिनी को आज लड़के वाले देखने आ रहे थे। वैसे तो वो केमिस्ट्री के एग्जाम से भी नहीं घबराती थी मगर जब उसकी यूं नुमाइश लगती थी तब उसकी सिट्टी पित्ती घूम रहती थी। मोहिनी को काफी रिश्ते वाले देख कर मना कर चुके थे। यह पांचवा रिश्ता था। मोहिनी पैने नैन नक्श की गृह कार्य में दक्ष थी। बी०एस०सी कर रही थी और स्कॉलरशिप से नवाजी जा चुकी थी। इन सूरज जैसी चमकती खूबियों पर ग्रहण था उसका सांवलापन। उसके इन गुंडों का और शादी के लिए जरूरी गुड़ों का आपस में कोई लेना देना नहीं था। हम तब की बात कर रहे हैं जब सुंदरता के केवल दो मापदंड थे, लड़की गोरी और पतली होनी चाहिए। जबकि लड़के का एक ही गुड़ मायने रखता था- होनहार। इससे पहले कि आप कुछ गलत समझें, होनहारों का सीधा सम्बन्ध उनकी पुश्तैनी जायदाद से होता था और रही बात लड़के की चमड़ी के रंग की तो क्या देखना उसमें, कृष्ण खुद सांवले थें। यदि लड़का संपन्न और रईस घर से है तो मोटा तंदुरुस्त तो होगा ही ना। भले ही इस तंदुरुस्ती

की आड़ में वो काला भैंसा क्यूं ना हो रहा हो पर वें सामाजिक नियमों से परे थें।

हम अगर गौर करें तो जमाना आज भी उतना बदला नहीं है। बस मापदंड बदल गए हैं। लड़का खुद चाहे कितनी भी अप्सराओं के बिस्तर गर्म करे पर लड़की तो आज भी कुंवारी चाहिए। ज्ञात करे कोई ऐसी युवती, जो थोड़ी तंदुरुस्त हो और उसे समाज ने "वजन कम कर लो, वरना शादी में दिक्कत होगी" का ज्ञान ना दिया हो। भारतीय समाज में आज भी लड़की का रंग अनचाहे रूप से उसकी ज़िन्दगी के कई महत्वपूर्ण फैसले करता है।

प्रशांत ग्वालियर में उसे देखने आया था। सुन्दर चेहरा, चौड़ी कद-काठी, गठीला बदन कुल मिला कर यौवन के चढ़ाव की हर व्याख्या को वो साकार करता था। प्रशांत अकेला नहीं आया था, मोहिनी को लगा कि उसके साथ उसका पूरा मोहल्ला आया था। पापा, मां, बहने, चाचा, बुआ, फूफा, मौसी, बच्चे सभी तो थे।

जैसे ही मोहिनी चाय नाश्ता की ट्रे लेकर आई ,चाची और बुआ तो जैसे कसम खाकर आई थीं कि नज़रों से ही अंदर के कपड़ों का रंग पता कर लेंगी। उनकी पैनी नज़रों ने मोहिनी के हाथ कंपा दिए थे। वो बैठते ही साड़ी की प्लेटे ठीक करने लगी, सोचा शायद इसलिए प्रशांत उसे घूर रहा है क्यूंकि यह खराब बनी है पर उसका घूरना जारी रहा और भी बेशर्मी और निर्लज्जता से।

वो अभी कमरे में आकर बैठी ही थी कि उसे आवाज़ें आने लगी। आप चाहे खुद को आने वाले तूफान के लिए कितना भी तैयार कर लीजिए पर तूफान आकर आपको उड़ा ही ले जाता है और आपकी सारी तैयारी धरी रह जाती है।

~~

अतीत के धागे

प्रशांत के चाचा- देखिए, हमें तो बताया गया था लड़की गोरी है।"

मोहिनी के पिता कमलनाथ बड़े होटल के मालिक थे। लड़के वाले अक्सर उसके सांवले रंग की चोट को दहेज के मरहम की पट्टी लगाने की कोशिश करते थे।

कमलनाथ- “जी, पर मोहिनी काली भी तो न-”

"जी गोरी भी तो नहीं है" प्रशांत की मां ने वहां मौजूद सभी दर्शकों को अवगत किया।

"हमें तो एक से एक लड़कियों के रिश्ते आ रहे थे पर हमने आपकी जान पहचान का मान रखा।" विनोद, प्रशांत के मौसा जी ने परिचय देते हुए कहा- "शर्मा जी तो दस लाख का रिश्ता लाए थे। भई, प्रशांत अकेला लड़का है, पिता जी की ज़मीदारी है और सोने पर सोहागा दिल्ली में कमाता भी है। आप बताइए, क्या यह रिश्ता अपने आप में लॉटरी नहीं है आपकी बेटी के नाम की।"

"हां भाईसाहब। मुझे तो प्रशांत फोटु से ही भा गया था। " मोहिनी के मौसा जी ने विनोद की हां में हां मिलाते हुए कहा।

"१० लाख में हमें कोई आपत्ती नहीं" कमलनाथ ने कहा।

"भाईसाहब, 10 में कहां कुछ होता है आज कल" प्रशांत के पापा ने दुकानदार की भांति स्वर में कहा।

"हमने सुना है मोहिनी के कई रिश्ते पहले भी टूट चुके है?" प्रशांत की मां ने तरकश से आखिरी तीर निकाला जो कि सटीक निशाने पर लगा।

"16 लाख से एक पैसा ऊपर नहीं हो पाएगा", कमलनाथ ने समर्पण करते हुए कहा।

"10 लाख नकद, 2 लाख के जेवर और बाकी रकम की गाड़ी" ,विनोद ने ऐसे रटी जबान में कहा मानो अभ्यास करके आए थे।

"दावत हमें तड़केदार चाहिए।" प्रशांत के पापा ने फरमाइशों के छल्लों में एक ओर टोकरा बढ़ाया।

"जी, यह सब तो होता रहेगा, लीजिए मुंह मीठा करे आप सब पहले।" लीला मेठाई की ट्रे रखते हुए बोली, ”मेरी बेटी आपका सब का मन जीत लेगी, आप देखिएगा।”

मोहिनी खाना खाकर बाहर निकली तो देखा कमलनाथ कुर्सी पर बैठे किसी विचार में डूबे है।

पानी का गिलास थामते हुए बोली, "बाबा, मना कर देते ना। क्या ज़रूरत ही थी यह रिश्ता हां करने की।” उसकी बातों से कमल नाथ का ध्यान टूटा।

"लाडो पैसा तुझसे ऊपर है क्या? चिंता तो मुझे प्रशांत की है। जाने क्यूं वो कुछ सही नहीं लगा मुझे। मैंने जब तेरे मौसा से कहा तो उन्होंने कहा कि मैं यूं ही चिंता कर रहा हूं। तेरी मां ने भी कहा कि शादी के बाद सारे लड़के ज़िम्मेदार बन जाते है। मैं तो मानता हूं कि जो लड़का 25 बरस तक ज़िम्मेदार ना बन सका तो क्या गारंटी है कि वो किसी और की ज़िंदगी की डोर जुड़ जाने पर ज़िम्मेदार हो जाएगा। मेरा तो जी घबराता है तेरे भाग्य को

लेकर, मोना।"

"अरे लड़कियां अपना भाग्य ले कर आती है लाला। शादी व्याह तो सब किस्मत का खेल है, इसकी किस्मत तुम क्या जानो?" मोहिनी की दादी ने कहा, "हम कोई बुरा थोड़ा करेंगे इसका, पहले तो पंडित और बाप जाकर गोद भर देते थे तो क्या लड़कियां खुश नहीं रहती थी लाला? कुछ ऊपर नीचे हो जाए तो लड़कियों को सब्र करना चाहिए। लड़कियां चाहे तो कितना ही त्योनाली क्यूं ना हो जाए, घोड़े पर चढ़ कर बारात लेकर तो नहीं जा सकती ना, लाला।"

"बाबा, आप जान कर मेरा बुरा नहीं करेंगे, अम्मा सही कहती हैं। आप बेफिजूल की सरदर्दी ना करें।" मोहिनी ने कहा।

देखते देखते शादी की वह घड़ी भी आ गई। शादी वाले दिन यह कहें कि बाराती बनियान और मोजे तक कमलनाथ के पैसों की पहने थे तो कहना कुछ गलत नहीं होता।

खैर, शादी होकर मोहिनी ससुराल आ गई। उसे यहां आकर पता चला कि लोग नई बहू से ज्यादा बहू के जेवर को लेकर उत्सुक थे। थकान का आलम यह था कि मोहिनी थकान का आलम यह था कि उसने जुड़ा खोलने का भी साहस ना किया और कब सो गई अंदाज़ा नहीं लगा।

आधी रात में सहसा गुलदान के गिरने के शोर से उसकी आंख खुली। कहीं से शराब की गंध आ रही थी। चौंक कर उठी तो देखा कोई शेरवानी में लड़खड़ा रहा था। उसे तनिक भी समय नहीं लगा प्रशांत को पहचानने में। यदि अंधेरे में मोहिनी के डर को कोई नाप सकता होता 1 से 10 की गिनती में तो वो 100 निकलता।

प्रशांत उसके पैरो के सिरहाने बैठ गया और उसके हाथ मोहिनी के बिछुनियों से बढ़कर उसके लहंगे को हटाते हुए ऊपर बढ़ने लगे। प्रशांत के हाथो की ठंडक और निष्ठूर्ता मोहिनी के पैरों के साथ दिल को भी भेद रही थी। मोहिनी ने प्रशांत कों हटाने की नाकाम कोशिश की-"जी, दूध।" प्रशांत ने जवाबी कार्यवाही में मोहिनी को धक्का दे कर पलंग पर गिरा दिया जैसे की मोहिनी के अपने शरीर पर सारे अधिकार सातवें फेरे के साथ ही अग्नि में स्वाहा हो गए। मोहिनी ने अपनी स्थिति को स्वीकार किया और शादी की आखिरी रस्म के लिए खुद को तैयार किया। उसकी आंख से छलकते आंसुओ ने उस पर अपनी मुहर लगाई। जब उसे नशे में लहंगे को उतारने का रास्ता नहीं मिला तो उसने लहंगा ऊपर ही उठा दिया और बिना देर किए मोहिनी के सबसे कोमल अंग को सबसे कठोर तरीके से आघात पहुंचाया।

इसी के साथ मोहिनी की पीढ़ा असहनीय हो गई। उसे ऐसा लगा जैसे उसकी टांगों के बीच में आग लग गई है। उससे यह वेदना अब ओर नहीं बर्दाश्त हो सकती थी और उसने इस दर्द को कम करने के लिए चादर को हथेलियों से भींच लिया पर चादर में वो ज़ोर नहीं था जो उस जलन को कम करे। प्रशांत ने अपनी पुरुषार्थ के तीर चलाने शुरू किए। इन तीरों की गति सहसा तेज हो गई और अब उसने मोहिनी का गला दबोचना शुरू कर दिया था। अंततः यह वेग शांत हुआ और प्रशांत उसके सीने पर निठाल हो गया। उसने प्रशांत को खुद पर से हटाया।

इस क्षण यह समझना सबसे मुश्किल था कि मोहिनी को सबसे ज्यादा पीड़ा कहा हुई है, क्षतिग्र्स्त उस मन पर जिसमें नवजीवन को लेकर सैकड़ों सपने चकनाचूर हुए थे या उसके उस नाजुक भाग पर जिसे उसने खुद ना छूकर किसी और को दे दिया और उसने उसे क्षिन्न कर दिया।

मोहिनी रोते रोते सोई और सोते सोते रोई। सुबह हुई तो शारीरिक पीढ़ा भावनाओं की वेदना से कहीं आगे जा चुकी थी। जैसे तैसे नहा कर निकली तो देखा दस बज चुके थे। जब तैयार होने को आयने के आकर खड़ी हुई तो होंठो के नील, हाथ के निशान रात के कहर की कहानी बयां कर रहे थे। मानसिक पीढ़ा तो पहले से छुपी थी पर इन्हें वो इन्हें किस जतन से छुपाती l उसे तो साड़ी भी बांधनी नहीं आती थी, अब तक मां पहनाती थी। जैसे तैसे वो तैयार हुई। रात के घावों को चूड़ी और लिपस्टिक से छुपाने के प्रयास में 12 बज गए।

बाहर नाश्ता चल रहा था। वो हड़बड़ाकर डायनिंग टेबल पर पहुंची।

"क्या सिखाया है पता नहीं घरवालों ने, बोल तो रही थी मम्मी इनकी दिल जीत लेगी, यहां तो मैडम बारह बजे उठ रही हैं!" सास ने ताने देते हुए कहा।

मोहिनी अपनी मम्मी की वो सीख याद आ गई जिसके हिसाब से ससुराल में हमेशा लड़की को झुकना चाहिए सो वो चुप रही।

"भाभी खड़ी ही रहेगीं या किचेन में भी आयेगीं!" उमा ने बुलाया।

उमा प्रशांत की सबसे छोटी बहन थी और स्वभाव से स्नेही। आवाज़ सुन कर मोहिनी किचन में गई।

"भाभी, लगता है तुम सोई नहीं रात में। भैया ने तंग तो नहीं किया ना? अच्छा बताओ, तुम्हें क्या नज़राना दिया भैया ने?" मोहिनी का ध्यान तो उमा की बातों पर था ही नहीं। वो तो अलग ही दुनिया में थी।

दरवाज़े की घंटी से मोहिनी का ध्यान टूटा। मुड़ कर देखा कि चाय का पानी कब का उबल उबल कर आधा हो गया है।

~~

चाय

"आयी बाबा!" उसने बालकनी से ही आवाज़ देते हुए कहा।

दरवाज़ा खोला तो आए हुए मेहमान को देख कर अनजाने में ही मुस्कान आ गई।

"रवि तुम भी ना, सांस तो लिया करो बेल बजा कर, तुम्हें क्या लगता है, मैं कुर्सी डाल कर दरवाज़े के पास बैठती हूं, गार्ड की तरह? इंसान को आने में टाइम लगता है।"

रवि, यानी रितुंजय कश्यप। रवि मोहिनी से दो फ्लोर ऊपर रहता था। एक दिन लिफ्ट में बात हो गई। जब बात निकलती है तो दूर तक जाती है बस दोस्ती हो गई।रवि इनकम टेक्स ऑफिस में सेक्शन ऑफिसर था।

"तुमने स्कूटी ठीक करा दी? मैंने कहा था करा लूंगी, तुम भी ना।"

"जब स्कूटी मुझसे खराब हुई तो ठीक क्या मेरे चाचा जी कराते?" स्कूटी की चाभी टेबल पर रखते हुए कहा।बनावटी बनावटी मासूमियत का चोगा ओढ़ काउंटर की तरफ छान बीन करते हुए उसने कहा।

दस मिनट बाद मोहिनी जब चाय लेकर पहुंची तो देखा कि रवि बालकनी में खड़ा फोन चला रहा है।

"तुम्हारी चाय, बिना चीनी और स्वाद की।" मोहिनी ने चाय की प्याली पकड़ाते हुए कहा।

"चाय को अगर मीठी ही बनाना होता तो बनाने वाले उसे चाय नहीं शर्बत कहते। पर इस ज्ञान को समझने के लिए एक ज़रूरी सामान चाहिए!" उसने गहरे अंदाज़ में कहा।

"और वो क्या है? श्री श्री रवि एक हज़ार महाराज!" उसने हाथ जोड़ने का स्वांग रचते हुए कहा।

"फीकी प्याली बालिके! वो लोग जो चाय के नाम पर चीनी घोल कर खुद को धोखा देते है यह बात उनकी समझ से परे है जैसे की तुम"।

"जी, प्रभु। आप चाय पीजिए और यहां से जल्दी से दफा होइए।" वो हंसते हुए बोली।

"तुम इसे जानती हो?" वो नीचे छाता लेकर खड़ी लड़की की तरफ इशारा करके बोला।

"क्यूं? तुम्हारी पुरानी गर्लफ्रेड थी?" वो कुछ संवेदनहीन होकर बोली।

"कितना शक करती हो मुझपर तुम मोना। इतना प्यार कही जान ना ले ले मेरी।"

"उफ्फ! रवि तुम भी ना। तुम जोकर हो ,ऊपर से लेकर नीचे तक -पूरे जोकर। कोई तुम्हे देख कर नहीं कहेगा तुम इनकम टैक्स में इंस्पेक्टर हो।"

"सेक्शन ऑफिसर मैम। पता है यह अपर्णा है। यह मेरे ऑफिस में रोहन और शशि दोनों से सच्चा प्यार करती है और दोनों के लिए जान दे सकती है।"

"और यह बात दोनों को पता है?" मोहिनी ने चाय की चुस्की के साथ पूछा।

"हां,रोहन को लगता है वो उसका सच्चा प्यार है और शशि को लगता है वो उसकी इकलौती मोहब्बत है" रवि चाय ख़तम करते हुए कहा।

"और यह सब तुम्हे पता है क्यूकी-"

"क्यूंकि वो दोनो ही मेरे दोस्त है।"

"लोग इतने भी बेवकूफ नहीं होते।"

इतने में दोनों ने देखा मोटरसाइकिल आई, रुकी, चालक ने अपर्णा को बाहों में भरा, उसके गालों का चुम्बन किया और वो उसके साथ सवार हो कर चली गई।

"जितना सच्चा प्यार यह लड़की पूरे शहर से कर रही है, पता लगना मुश्किल है। शर्त लगाओ दस हज़ार की, पता नहीं लगेगा।"

"तुम हार जाओगे" वो अंदर जाते हुए बोली।

"तुम दस हज़ार तैयार रखना जानेमन"

मोहिनी ने आंखे घूमाई और सिंक में कप रखे।

"सुनो मैं जा रहा हूं। विमला आती होगी खाना बनाने, फिर मुझे मिर्च में से आलू भी तो निकाल कर खाने है।" रवि चला गया।

मोहिनी रवि को लगभग लगभग दो साल से जानती थी। रवि की हंसी ठिठ्ठा हमेशा उसकी थकान उतार देती थी। रवि के साथ उसका सामाजिक तौर पर कोई रिश्ता नहीं था। बस पड़ोसी का, दोस्ती का और अपनत्व का रिश्ता था। रवि के साथ शाम की चाय एक रिवाज़ हो गई थी। रवि ऑफिस से सीधे उसके यहां ही रुकता था। मोहिनी ने कभी उसका आना हर्ज नहीं किया। करती भी क्यूं? इतने बड़े अनजान शहर में ज़रा सा अपनापन किसे बुरा लगता है। उसे डर लगता तो बस इस बात का कि धीरे धीरे एक दिन यह दोस्ती भी बाकी रिश्तों की तरह खोखली हो जाएगी और वो एक बार फिर शून्य हो जाएगी।

~~

तोहफ़ा

रात को दाल चावल खाते खाते उसकी नजर नाइट लैंप पर रखे हुए पैकेट पर गई। उसके ना होने पर अक्सर उसकी पोस्ट और पार्सल नीचे वॉच मेन ही रख लेते है। ऊपर जन्मदिन लिखा होने की वजह से सबको लगा उसका जन्मदिन है। वॉच मेन से लेकर नीचे ग्राउंड फ्लोर वाली शीबा, सभी उसके लिए" तुम जियो हजारों साल, साल के दिन हो एक हज़ार" गा रहे थे। हद्द तो तब हो गई जब खाना बनाने वाली मीता "दीदी, आपके जन्मदिन के लिए हम फूल लाए हैं" कहने लगी।

बासी लिफाफे से लिपटे हुए इस रहस्मय अजूबे को देखकर अंदाज़ा लगना भी मुश्किल था कि इसमें क्या है। मोहिनी के दिल में किसी करीबी का नाम भी तो नहीं आता था जिसे वो कह दे कि यह उसकी ओर से है। किसी छोटे बच्चे की आतुरता से वह उस पैकेट को खोल कर देखने के लिए बेचैन हो उठती है।

जन्म दिन की शुभकानाएं
मोहिनी

ऊपर की लिखावट से पुरानी जान पहचान की खुशबू आ रही थी। यह भीनी सुगंध स्मृति पटल को छू कर उसे मनोहर एहसास तो दिला रही थी मगर उसे झकझोरने में असफल थी। खोल कर देखा तो यह एक पुस्तक थी। खास वो कागज़ो का ढेर नहीं पर उस ढेर का रचयिता था, उसका लेखक- प्रेमचंद, जिसने लिखी थी यह पुस्तक- निर्मला। पहले पन्ने पर उसे लिखा मिला:-

मेरी प्यारी
मोहिनी।
भगवान तुम्हारे हिस्से में यह सारा जहां लिख दे
सालगिरह मुबारक तुम्हें
- उमा

यह नाम जैसे मोहिनी के हृदय के सारे भाव को विछिन्न कर गया हो। कभी कभी हमारे हृदय के भाव हमसे इतने गैर हो जाते है कि महसूस तो दूर हम उन्हें स्वीकृति ही नहीं दे पाते और अंतर्मन में चले हुए युद्ध से भागने लगने है। वो किताब को मोड़ कर उसके पन्ने पलट ही रही थी की उसकी नज़र किताब से निकल कर गिरी चिट्ठी पर गई।

मोहिनी,
तुम्हें मेरा ढेर सारा प्यार।

उम्मीद है तुम आज भी उतनी ही सजल और शालीन होगी जितनी मैने तुम्हें आखिर बार देखा था। तुमसे लाख शिकायतें थी, सोचा मिल कर खूब गिला करेंगें पर हमारा मिलना अब नामुमकिन सा लगता है। हम गणित में तुम्हारी तरह कुशल तो नहीं है पर तुम्हें यह तोहफ़ा सालगिरह से २-३ दिन पहले तो मिल ही गया होगा। उम्मीद है तुम प्रेमचंद को आज भी उतना चाव से पढ़ती होगी जितना कल पढ़ती थीं और तुम्हें यह भेंट पसंद आई होगी। तुमने तो अपने एक भी जन्मदिन पर हमें ना बुलाया।

लगता है जैसे कल की बात है कि तुम घर में शादी हो कर आई थी। अभी कुछ दिन पहले ही तो तुम्हारी पायलों की झंकार पूरे आंगन को सराबोर कर रही थी। तुम्हारे केश, तुम्हारी साड़ी, तुम्हारी छुपी सी मुस्कान, मोहिनी सब कुछ इतना भी पुराना नहीं लगता। जब भी मायके जाते हैं लगता है तुम पानी का ग्लास लेकर आओगी और इतने दिन बाद आने की उलाहना दोगी। जब बाबा के कमरे में जाती हूं तो लगता है अभी मां आकर हमें काम ना करके प्रपंच करने के लिए डपटेगी। मैं तुम्हारे आइने में जाकर तुम्हें इतर की जगह परफ्यूम लगाने के मशविरे दूंगी। सच मोहिनी, यह कल ही के तो किस्से हैं।

अलमारी में रखी तुम्हारी की साड़ियां को मैं यूं ही जब तब पहनकर हमारे बासी रिश्ते को नया करने की बेज़ार कोशिश करती रहती हूं। जब कभी ज़िंदगी जटिल होती है, सोचती हूं तुम होती तो क्या कहती?

मोहिनी क्या तुम्हें उमा कभी याद नहीं आती? क्या तुमने बीते कल के सारे अंश भूला दिए? तुम तो कहा करती थी कि मेरा तुम्हारा रिश्ता दादा के परिचय का मोह ताज नहीं है। तुमने तो मुझसे वादे किए थे मुझे कभी अकेला ना छोड़ोगी भाभी, फिर क्या वो बाते सच नहीं थी? वो बातों के पिटारे जो हमे रात भर सोने ना देती थी, जिस भाभी नंद के रिश्ते को देख कर पूरा घर जलता था क्या वो रिश्ता सच में भाभी नंद का था और कुछ नहीं?

मोहिनी तुम्हें हमने कभी भाभी के रिश्तों के दायरे में ना रखा। तुम तो हमारी सखी थी, हमारी दोस्त। पर अब पीछे मुड़ कर देखते हैं तो ऐसा लगता है तुम कभी थी ही नहीं बस हमारी कल्पना थी। ना कभी हम पलंग पर लेटे और ना हमने कभी बातें की, ना हमने एक दूसरे की टांग खींचीं ना कभी एक दूसरे के आंसू पोंछे।

मुझे वक़्त के पहिए को पीछे घूमाने का मौका मिले तो मैं अपना सर्वस्व न्योछावर कर के भी तुम्हारी तकलीफ़ ख़तम करना चाहतीं हूं। मुझे नहीं पता यह सब कहा शुरू हुआ पर जहां यह अंत हुआ काश मैं वो बदल पाती।

मोहिनी, तुम गई और यूं गई कि हमसे मिलने के सारे हक ले गई। तुमने तो अपनी यादें तक हमें ना दी। तुमने तो अपना नंबर तक ना दिया कि तुम्हें फोन करके अपने दुख ही सुना ले। तुमने तो घड़ी भर में हमें दिलदार से हटा कर अनजानों की श्रंखला में खड़ा कर दिया। वो तो भला हो तुम्हारी सहेली का, जिसने लाख मनोवल करवाए पर तुम्हारा पता आखिरकार दे ही दिया।

यह खत लिखते हुए मेरे दिल को कोई आशा नहीं थी कि तुम कभी इसे पढ़ोगी या मुझे तोहफा पसंद आने की सूचना दोगी। मैंने यह लिख रही हूं क्योंकि बीते कई हफ्तों से दिल भारी था पर तुम यह हरगिज़ ना समझना कि तुम पर मुझे वापस लिखने का कोई बोझ है या तुम मुझसे संवाद रखने को बाध्य हो। नहीं , मोहिनी! दोस्ती में व्यापार की ना कोई जगह थी, ना है और ना कभी होगी।

सदा तुम्हारी शुभचिंतक
उमा

~~

दामाद

मोहिनी को बीते लम्हों ने आकर घेर लिया। फिर क्या यह सच नहीं कि अतीत कितना ही दुखद क्यों ना हो मगर उसकी स्मृतियां मधुर ही होती है। अब पीछे मुड़ कर देखो तो लगता है कुछ बरस पहले वो कोई अलग ही मोहिनी थी। डरी हुई, सहमी सी मगर वो उमर का दोष था, इक्कीस की थी मोहिनी जब उसकी शादी प्रशांत से हो गई।

"भाभी, लो दादा आ गए" उमा ने ठिठोली करते हुए कहा।

प्रशांत का ज़िक्र सुनकर जैसे मोहिनी को सांस नहीं आयी। रात की पीढ़ा अब भी भयावह मंज़र सी उसके दिल को खाए जा रही थी।

"उमा, क्या तेरी नई भाभी कान मायके छोड़ कर आई है" सास ने ज़रा कड़की से आवाज़ लगाई तो मोहिनी के मन के घोड़ों ने रफ्तार धीमी की।

"भाभी जाओ वरना मम्मी तुम्हारी शामत ला देंगी" उमा ने हड़बड़ी में प्लेट पकड़ा कर कहा।

मोहिनी डरते डरते प्रशांत को नाश्ता देने लगी। प्रशांत ने इधर उधर रास्ता साफ देख कर मोहिनी का हाथ पकड़ लिया। मोहिनी को काटो तो खून नहीं। मोहिनी ने प्रशांत से हाथ छुड़ाने का भरसक प्रयास कर रही थी पर सब व्यर्थ हो रहा था।

"भाभी कुछ लेंगे दादा ?"

उमा की आवाज़ से प्रशांत का ज़ोर कम हुआ तो उसकी सांस में सांस आई। इतने में प्रशांत की मां भी आ गई। प्रशांत खा कर प्लेट ले कर जा ही रहा था कि उन्होंने टोका-" तू क्यों उठाता है, अब यह है ना तेरे काम करने को! मोहिनी प्लेट ले कर जा"

बर्तन धोकर मोहिनी टेबल पर बैठी तो उसका सर चकराने लगा। कहना मुश्किल था कि भूख थी या मायके में ना होने की पीढ़ा आंखों से छलक रही थी। यह आंखों भी बड़ी काफ़िर होती है, दर्द पेट में है, आंसू आंख में है। इंसान को दर्द छुपाने की इजाजत भी नहीं देती हैं। मायके में मां खाने की थाली लेकर पीछे फिरती है, दो रोटी के निवाला मुंह में डालने के लिए ना जाने कौन कौन सी कहानियां सुनाती है तब क्यों एहसास नहीं होता कि इस थाली के भी कुछ मायने है।

"भाभी तुमने कल रात से कुछ ना खाया, देखो हम तुम्हारे लिए नाश्ता लाए है, तुम ना खाओगी तो हम भी ना खाएंगे।" उमा नाश्ते की प्लेट ले कर आ गई। उमा का स्नेह देख कर मोहिनी की आंखे छलक आयी।

"भाभी, तुम्हें याद आ रही होगी ना मायके की? दिल क्यों छोटा करती हो ? पगफेरे पर चली जाना ना।"

मोहिनी के मुंह में कौर डालते हुए उमा ने सुझाया।

दोपहर में जब मोहिनी कमरे में पहुंची तो पाया प्रशांत अख़बार पढ़ रहा था। उसे देखते ही उसकी आंखें ऐसे चमक उठी मानो उसका ही इंतजार कर रहा था। पलंग से कूदकर मोहिनी को एक हाथ से जकड़ कर दरवाजे की कुंडी लगा रहा था कि मोहिनी उसकी कैद से बच कर दूर खड़ी हो गई। प्रशांत को तो आज तक यही सिखाया गया था कि

पत्नी को ना कहने का हक नहीं है तो मोहिनी को यह हक कहा से मिल सकता था। प्रशांत यह देख कर लाल हो गया और मोहिनी को मारने दौड़ा।

चीख कर बोला-" मोहिनी! यह क्या बदसलूकी कर रही हो?"

"वो मेरे पैरो में दर्द था तो..बुखार.." मोहिनी मिमियाते हुए बोली।

मगर प्रशांत को जैसे सरकारी लाइसेंस मिल गया था उसके शरीर पर और वो उसका इस्तेमाल करने में कोई भी देरी नहीं करना चाहता था। उसने तुरंत मोहिनी के होंठो को अपने होंठो से चखा और उसकी साड़ी का पल्लू हटा फेंका। मोहिनी तो बस जैसे एक पुतला बन कर रह गई थी। यही तो सिखाया गया था हमेशा से पति की सेवा करो, उसे खुश रखो। यही तो वो कर रही थी और उस प्रक्रिया में खुद को तिल तिल करके मारती जा रही थी।

प्रशांत ने उसकी साड़ी एक झटके में खोल दी। उसका हाथ मोहिनी की कमर से होकर ब्लाउज के हुक पर था। ब्लाउज के फटने की आवाज़ तो जैसे प्रशांत को हरी झंडी दे गईं मोहिनी को कैसे भी हासिल करने की। उसने मोहिनी को उठा कर पलंग पर फेंक दिया। मोहिनी एक बार प्रशांत की आंखों में झांकती है और प्रशांत की आंखो में हवस देख कर उसके विवाहित जीवन के बचे हुए सपने भी दम तोड़ देते हैं। उसके बाद क्या हुआ क्या खबर मगर कहना मुश्किल है कि प्रशांत के मर्दानगी के आघात मोहिनी की आत्मा को ना भेद पाए। मोहिनी शिकायत करती भी तो किस से? कौन से थाने में रपट लिखवाती और उसकी दलील देता भी कौन? इस समाज में जहां बेटा और बेटी के अधिकारों के मापदंड अलग है उस समाज में उसने तो प्रशांत को अग्नि के सामने अपनी रजामंदी दी थी।

शाम को मां का फ़ोन आया। इत्तेफ़ाक से मोहिनी ने उठाया। सभी लोग मंदिर गए थे तो मोहिनी को मौका मिल गया दिल हल्का करने का। अक्सर घर में एक फोन होने की वजह से वो ज्यादातर सार्वजनिक उपयोग हेतु था। मोहल्ले के सारे फोन उसी पर आया करते थे।

"मां! तुम्हारी बड़ी याद आती है। बाबा कैसे है? दादी मुझे याद करती है? विभा की शादी के लिए कुछ बात हुई कहीं?"

"बस बस! और क्या ख़ाक याद आती है तुझे मेरी? मैंने फोन किया तो तुझे मेरी याद आ गई? बातें बनाना तो तू खूब सीख गई है रे। जमाई जी कैसे हैं? तेरी सास ताने तो मारती है ना?" मोहिनी अनचाहे सुबकने लगी। उसका गला रूंध गया। लाख छुपाने का जतन किया पर मां तो फिर मां ही होती हैं।

"क्या हुआ मोहिनी? तू रो क्यू रही है, तुझे मेरी कसम बता बेटी?"

"मां, ससुराल मायका क्यूं नहीं बन सकता? सास मां क्यूं नहीं बन सकती? जब दामाद बेटे से बढ़ कर हो सकता है तो बहू क्यूं बेटी जैसी क्यों नहीं? "

"बेटा, ससुराल अभी थोड़ा नया है। एक बार तू वहां के तौर तरीके सीख जाएगी तो तू भी वहीं की हो जाएगी। देख तेरी ससुराल वाले चाहे कुछ कहे तू सब्र रखना तभी तू उनके दिल में अपनी जगह बना पाएगी। प्रशांत ठीक है? "

"मां! उसके साथ सारी ज़िन्दगी रहने के ख्याल से ही मैं सिहर जाती हूं।छोटी सी बात पर मुझे मारने को दौड़ा। मुझसे वो बहुत अलग है।"

"ऐसे अशुभ शब्द मत बोल। देख अब प्रशांत जैसा भी है तेरा नसीब है। हर घर में ऐसे झगड़े तो होते रहते है। चार बर्तन साथ होंगे तो खटकेंगे ही। मर्दों का मिज़ाज गरम होता है। हर बात को पकड़ कर बैठेगी तो नहीं जी पाएगी। "

"अच्छा मां ,फोन रखती हूं। नमस्ते" दरवाज़े पर किसी के आने की आहत हुई।

"नमस्ते बेटी। जा वरना काम में देर होगी। नवेली दुल्हन का फोन पर टल्ले हांकना शोभा नहीं देता। लोग बेवजह बाते बनाएगें।"

~~

जन्मदिन

नवंबर को महीना लग चुका है। ठंड की चादर दबे पांव सूरज की किरणों को अपने अंदर समेट रही है। मोहिनी की बालकनी में रखे पौधों की ओंस इस बात का पुख्ता सबूत दे रही है। सुबह की हवा ताज़गी के साथ सर्दी का भी एहसास संजो रही है। सुबह का कोहरा घना ना होने के बाद भी स्वेटर पहनने पर मजबूर कर रहा है। मोहिनी का कैलेंडर 5 नवंबर दिखा रहा है। अर्थ आज मोहिनी का जन्म दिन है। पर मोहिनी के लिए तो आज का दिन एक आम दिन है। बचपन में घर पर रिवायत थी कि जन्म दिन के दिन आपको नए कपड़े पहनाए जाते थे। अब रिश्ते बदल गए तो रिवायत भी पीछे रह गई।

मोहिनी नाश्ता कर रही थी कि दरवाजे की घंटी बजी। इतने सुबह कौन आया होगा? मोहिनी ने दिमाग़ पर ज़ोर दिया। दरवाज़ा खुला तो देखा रवि था। उसने मोहिनी के दरवाज़ा पूरा खोलने का इंतज़ार भी नहीं किया और बेबाकी से अंदर घुस गया। उसकी चाल से ही उसकी बैचेनी का अंदाज़ा लगाना किसी भी नौसिखिए के बाय हाथ का खेल था।

"विमला फिर नहीं आई।" मोना की प्लेट का सैंडविच उठाते हुए बोला। मोना ने उसे व्यंग की नज़रों से देखा।

"मेरे प्यारे रवि! क्या तुम्हें पता है, हम में से कुछ लोगो को ऑफिस समय पर जाना होता है क्योंकि उनकी वेतन कट जाता है। वहीं आपका ऑफिस तो तब शुरू होता है जब आपका मन आपसे कहेगा कि चलो अब ऑफिस चलते है।"

"भूखे को वापस लौटा रही हो? पाप लगेगा तुम्हें" बनावटी भाव से रवि ने कहा।

"मेरा लंच ले जाओ। मैं और बना लूंगी।"

"तुम बनाओ, साथ चलेंगे। मैं तुम्हे छोड़ दूंगा। "

"मैं स्कूटी से चली जाऊंगी। तुम लंच लो और रवानगी डालो।"

"मैं भी तुम्हारी ही स्कूटी की बात कर रहा था"

"तुम मुझे मेरी स्कूटी से छोड़ोगे? रुको मैं तुम्हारी मदद करती हूं इसे कहने में- मोहिनी जी! क्या आप मुझे लिफ्ट दे देंगी? क्यूंकि मेरी कार फिर से खराब हो गई है।" काफी देर तक जवाब ना मिलने पर मोहिनी ने किचन से देखा रवि उसके फोन में कुछ देख रहा है।

"रवि? तुम सैंडविच और लोगे?" रवि का ध्यान अपनी ओर करते हुए कहा।

"नहीं। बस हो गया। आज तुम्हें बैंक की तरफ से फोन पर जन्मदिन की शुभकामनाएं क्यों आई हैं?"

"क्यूंकि आज मेरा जन्म दिन है शायद" मोहिनी ने आंखें नचाते हुए कहा।

"हैप्पी बर्थडे मोना। भगवान तुम्हें संसार की सारी खुशियां दे। दो साल में पहली बार पकड़ी गई हो। दावत नहीं जलसा होगा।"

"रवि। मैं कोई बच्ची नहीं हूं जो जन्म दिन पर फुग्गे फोडू, नाचू गाऊ। कल तुम्हारी पार्टी पक्की, आज नहीं यार। आज बैंक में बहुत काम है।" लंच पकड़ाते हुए मोहिनी बोली

"तुम्हारा लंच?"

"चलो अब, तुम मेरी तनख़ाह कटवाओगे"

मोहिनी को बैंक छोड़ कर रविं स्कूटी मोड़ ही रहा था कि मोहिनी ने कहा
"सुनो! स्कूटी ले कर घर चले जाना मुझे आने में देर हो जाएगी।"
रवि हामी भर कर आगे बढ़ गया। जैसे ही वो अपने केबिन में घुसी, देखा पिछले साल की भांति इस बार भी टेबल पर एक फूलों से भरा हुआ गुलदान रखा है। उसके ऊपर है एक सन्देश जो कुछ इस तरह था

डियर मोहिनी
आपके जन्म दिन की आपको ढेर सारी शुकामनाएं।
- बैंक ऑफ इंडिया परिवार

इस गुलदस्ते की एक ख़ास बात थी। जन्म दिन किसी का भी हो, गुलदस्ते पर उसके ऊपर रखे हुए फूल समान रहते थे। बस कार्ड पर नाम बदल जाता था जैसे मोहिनी के स्थान पर स्वाति।
पूरा दिन कहां निकल गया मोहिनी को तो भनक भी ना हुई। घड़ी में देखा तो पांच बज रहे थे। मोहिनी का फोन बजा।
"कहा हो बर्थडे गर्ल? मैं बैंक के बाहर खड़ा हूं।"
"रवि! मैंने कहा ना मुझे देर लगेगी। विमला आ कर फिर चली जाएगी। तुम जाओ।"
"ठीक है।" इससे पहले मोहिनी कुछ कह पाती उसने फोन काट दिया। मोहिनी काम ख़तम करके सात बजे निकली तो देखा रवि एयर पोड्स लगा स्कूटी पर बैठा फोन में गेम खेल रहा है। मोहिनी के मन के चारों तरफ पत्थर की दिवार में मानो चटकन सी हुई।
"रवि, रवि...रवि?"
मोहिनी ने चीखा तो उसने सुना। एयर पोड्स निकलते हुए बोला
"मैं बहरा थोड़ा हूं, चीख क्यूं रही हो तुम?"
"वो मैं एयर पॉड्स लगा कर थोड़ा ऊंचा सुनती हूं। तुमसे कहा था चले जाओ? तुम भी ना रवि! "
"चले जाता और तुम्हें सस्ते में छोड़ देता।"आंखे नचाते हुए मोहिनी स्कूटी पर बैठी।
रवि कुछ नए रास्ते पर ले कर जा रहा था। चारों ओर बस अंधेरा ही था। यह बरेली का कौन सा कोना था जिधर मोहिनी आज से पहले कभी नहीं आई थी। वो बेवकूफ किसे बना रही थी, पिछले तीन सालों में मोहिनी बैंक के अलावा कहीं नहीं गई थी। मुल्ला की दौड़ मस्जिद पर जा कर ख़तम हो जाती थी।
वो कुछ दबे स्वर में बोली, "रवि यह कहा जा रहे हैं हम, शहर तो काफी पीछे रह गया।"
"मैं तुम्हें जंगलों में जा कर लूटूंगा और फिर तुम्हें वहीं मार दूंगा। बचपन में तुम पढ़ा करती थी एक हसीना और एक कातिल, वो कातिल मैं ही हूं। तुम मुझे असल में

पहचान ही नहीं पाई हो"

“तुम भी ना रवि!” मोहिनी ने रवि को पीठ पर हाथ जमाया।

~~

बियोनिका

बड़े से रिजॉर्ट के आगे रवि ने स्कूटी रोकी।

"तुम रुको। मैं स्कूटी पार्क करके आता हूं।

पंद्रह मिनट बाद भी जब रवि नहीं आया तो मोहिनी आगे बढ़ी। रिजॉर्ट काफी शानदार और साज सज्जा से लदा हुआ था। लॉन से होते हुए मुख्य द्वार था। लॉन में रात की रानी की भीनी खुशबू मानो उस जगह की सुंदरता में चार चांद लगा रही थी। बैठने के लिए कुछ पुरातन ज़माने की कुर्सियां और मेज पड़ी थीं। वो कुर्सियां पुरानी होते हुए भी आधुनिक लगती थी। दीवाली वाली झालरें जहां तहां बिखरी थीं। इतने में उसे किसी ने कंधे से रोका। मुड़ कर देखा तो रवि था।

"अंदर भी चलोगी या यही खड़ी रहोगी मैडम?" रवि ने उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा।अंदर से यह रिजॉर्ट और भी शानदार था। पूरी सजावट, वहां लगे हुए कलाकृति , शीशे यहां तक की वहां काम करने वाले लोगों की पोशाकें सब कुछ पुरातन और आधुनिकता का अदभुत मिश्रण था। ज्यादातर चीज़े लकड़ी की थी और बीते ज़माने को दर्शाती थी। अंदर घुसने के बाद अचानक मोना का ध्यान रवि पर गया। रवि तो नहीं था। वो अकेली ही चल रही थी कि जैसे ही वो मुड़ी, तभी

"सालगिरह मुबारक हो मोना!" रवि ने उसे लाल गुलाब का बड़ा सा गुच्छा देते हुए कहा। मोना के साथ तो यह सब पहली बार हो रहा था। वो खुश थी या हैरान कहना काफी कठिन था। जब आपके अंदर दो भावनाएं समान रूप से बह रही हो तो जज्बातों को शब्दों में पिरोना और भी कठिन हो जाता है।

"शुक्रिया रवि!" बस इतना ही कहते बना।

तभी चलते हुए वो रिजॉर्ट के पीछे के हिस्से में ले आए गई। यह हिस्सा कुछ कुछ बाहर के हिस्से की तरह था। बस वो इंतजार के मकसद से बना था तो तो यह बैठ कर लुत्फ उठाने के लिए। फूलों की क्यारी, क्रॉकरी, किनारे से लगा बावर्ची काउंटर सब कुछ वहां के वातावरण को इतना पूरा कर रहे थे कि उनका होना अलग से पता नहीं देता था पर एक भी फूल की गैर मौजदगी उस जगह को अधूरा कर देती थी। अभी वो खड़ी हुई इस जगह को आंखो में उतार ही रही थी कि हल्के गुलाबी रंग की साड़ी पहने सुन्दर सी युवती ने उसे ध्यान से निकला।

"सर, आपकी टेबल उधर है" उसने हाथ से इशारा करते हुए दिखाया। मोहिनी को उसकी आंखों में झांकने की जरुरत नहीं थी यह जानने के लिए कि उसका दिल रवि पर आ गया था। मोहिनी ने आंख भर कर रवि को देखा तो सोचा कि गलती उस लड़की की हो ही नहीं सकती थी।

रवि का सुडौल सधा हुआ शरीर, गोरा रंग, किसी भी अप्सरा को स्वर्ग से उतारने पर मजबूर कर सकता था। उस पर आज उसने काली टी शर्ट पहनी थी, कत्ल- ए- आम के लिए जरूरी समान मौजूद था। रवि की विनम्रता उसके व्यक्तित्व को और भी खूबसूरती से उभारती थी। वो लोग सच से अंजान है जो कहते है शालीनता मर्दों को कमजोर दर्शाती है। असल में देखा जाए तो औरत के पास तो पचास गहने हैं पहनने को पर आंखें तो अक्सर

उन्हीं मर्दों पर टिकती है जिन्होनें नम्रता का अदृश्य चोला ओढ़ा होता है।

आखिरी के पंक्ति में पड़ी वो टेबल यूं तो अलग से भी दिख रहीं थीं, वजह थी उसे रोशन करने वाली मोमबत्तियां। कांच के खांचे में रखी हुई वो सुगन्धित मोमबत्तियां सच में काफी सुंदर महसूस हो रही थी। मोहिनी का ध्यान जब उधर गया वो तो मंत्र मुग्ध सी हो गई। उसे तो कदम बढ़ाने तक का होश नहीं रहा।

"रवि यह जगह सच में खूबसूरत है।" दबी जुबान में उसने कहा।

“मगर तुमसे फिर भी कम” रवि ने उसका हाथ खींचते हुए कहा।

इतने में मोहिनी देखा कि वहीं गुलाबी साड़ी वाली युवती केक ले कर आ रही है। केक जब आया तो देखा वो उसका पसंदीदा रेड वेलवेट था- "हैप्पी बर्थडे मोना"। उसे याद आया पिछले साल उसने शायद रवि से इस बात का ज़िक्र किया था। इतनी छोटी छोटी चीजें कोई कैसे याद रख सकता था वो भी तब जब कि उसे खुद वो बातें नहीं याद थी। मोहिनी ने सोचा।

"मैडम केक काटो? तुम कहां बीच बीच में ख़यालो में खो जाती हो।"

हैप्पी बर्थडे टू यूं

वहां मौजूद सभी लोगों ने गाया। उस युवती ने भी जिसने हल्के गुलाबी रंग की साड़ी पहनी हुई थी और उसकी नज़रें रवि को एक क्षण के लिए भी अकेला नहीं कर रही थीं। पीछे कोई हल्की धुन भी चल रही थी पर मोना को याद नहीं। मोना को तो समझ ही नहीं आया यह हो क्या रहा है। खैर,केक काट कर उसने रवि को खिलाया। केक बड़ा था, ख़तम होना मुश्किल था। मन भर के खाने के बाद भी आधा बच गया। रवि ने उस युवती को बचा हुआ केक पैक करने को बुलाया तो उसकी आंखें चमकी।

"लो खाना आ गया।" रवि ने उसे चौंकाते हुए पूछा। “देखो ,मुझे बिल्कुल नहीं पता था तुम्हें क्या पसंद है इसलिए मैंने मेन्यू में से सारी मेंहगी चीज़े मंगवा ली ,बिल तुम्हें जो देना था।” खाना देखने में बहुत स्वादिष्ट लग रहा था। शाही नान, रायता, क़बाब, पनीर पसंदा, गट्टे सब कुछ मोहिनी के मन मुताबिक चीज़ें थीं।

"तुम्हें कैसे पता कि मैं नॉन वेज नहीं खाती?" मोहिनी ने खाना परोसते हुए कहा।

"मुझे नहीं पता था। मैंने चिकन नहीं मंगाया क्योंकि मेरा मन नहीं था।"

"और मुझे लगा तुमने कहा कि तुमने खाना मेरी पसंद का है।"

"इस रिजॉर्ट का नाम है बियोनिका। यह क्या नाम हुआ।"

मोहिनी मुस्कुराते हुए बोली," हां पता है। बेयोंसे और वेरोनिका के मेल से, बेयोंसे को तो हम सब जानते हैं, वो परफेक्ट वाली और वेरोनिका सोनू की स्कूल की अध्यापिका थी।" मोहिनी ने रटी हुई जुबान में बोला।

"सोनू कौन?"

"पता नहीं।"

"और तुम्हें यह सब पता है क्योंकि?"

" मत पूछो।" मोहिनी ने थकी हुए अंदाज़ में कहा।

"जानती हो मोना यह शायद पहली बार है कि मैं किसी के साथ यूं आया हूं पर

पता नहीं क्यूं, अजीब नहीं लगता। तुम मुझे अपनी सी लगती हो। "

मोहिनी के पास अब शब्दों की कमी हो गई। उससे जवाब देते ही नहीं बन रहा था। रवि के सस्ते ठहाकें शाम और खाना दोनों का ही स्वाद बढ़ाते थे। जैसे ही खाना ख़तम हुआ वो युवती दोबारा प्रकट हुई, इस बार शायद उसके हाथ में कुछ था। अब मोहिनी उसकी रवि पर एकटक नज़रों से कुछ असुविधाजनक हो रही थीं।

"यह मेरी मीठा और यह तुम्हारा।" रवि ने टेबल पर एक छोटा सा काग़ज़ का थैला उसकी ओर सरकाया और इमरती को अपनी तरफ बढ़ाते हुए कहा। मोहिनी ने थैले में हाथ डाला तो उस में एक छोटा सा तोहफा था और उसके साथ एक संदेश।

जन्म दिन की शुभकामनाएं ,
- रवि

जब मोहिनी ने खोल कर देखा तो उसमें कान के छोटे से बूंदे थे। हीरे जड़े हुए, मीना के काम के साथ, तनिष्क का तमगा उन्हें मंहगे बनाता था। पर यह तो बिल्कुल वैसे थे जैसे मोहिनी ने पिछले साल रवि को बताए थे। असल में यह उसकी कल्पना से अधिक ही खूबसरत दिख रहे थे।

"तुम्हें पसंद नहीं आए मोहिनी? यह बदल भी सकते हैं। मुझे लगा तुम्हें अच्छे लगेंगे। पर मैं एक दम पक्के तौर पर नहीं कह सकता यह मुझे यह पसंद आए पर तुम इनकी जगह कुछ और भी ले सकती..."

इससे पहले रवि कुछ और बोल पाता मोहिनी जाकर उसे गले लग गई। मोहिनी की आँख के आंसुओ ने रवि की टी शर्ट भीगो दी। अचानक हुए इस घटनाक्रम ने रवि को भी हैरान कर दिया था और आस पास वाली जनता जनार्धन को भी। उसे समझ नहीं आया वो मोहिनी को अपनी बाहों में ले या उसे रोने से रोके। तभी मोहिनी को अपनी गलती का एहसास हुआ और वो दो कदम पीछे हटी।

"यह बहुत सुंदर है रवि! शुक्रिया रवि। मुझे एहसास दिलाने के लिए कि मुझे अब भी छोटी छोटी खुशियों में मुस्कुराने की इजाज़त है।" ज़िन्दगी में कुछ लम्हें होते हैं जिनके लिए हम जीते है, फिर कुछ लम्हें वो होते है जिन में हम जीते हैं। आज मोहिनी के जीवन का यह बाद वाला लम्हा था।

बिल आ गया। जैसे ही मोहिनी बिल देने को हुई रवि ने क्रेडिट कार्ड आगे बढ़ा दिया।

"आज मैं दे देता हूं, अब तो आना जाना लगा ही रहेगा।" रवि ने आखिरी वाक्य उस युवती को देखकर कहा जिससे मोहिनी थोड़ा असहेज हुई। उसने बिल उसके हाथ से लेते हुए कहा।

"कीप दा चेंज!(बचे हुए पैसे रख लेना) "

आखिरी के तीन शब्द उसकी उम्मीद से कुछ ज्यादा ही कढ़वे सुनाई दिए।

"चलो रवि, लेट हो रहे हैं।"

"अरे। मैं स्कूटी की चाभी भूल गया वहीं। " थोड़ी दूर आकर रवि ने कहा।

" मेरे पास है! " मोहिनी ने उसका हाथ खींच कर कहा।

" मेरा मतलब, घर की चाबी।"

जब वो वापस आया तो मोहिनी ने देखा वो एक हाथ में टिश्यू पेपर दूसरे हाथ में बचा हुए केक लाया था। टिश्यू उसने मोहिनी के हाथ में थमाया "यह तुम्हारे लिए।"

मोहिनी ने खोल कर देखा तो उसमें किसी लड़की का नाम और फोन नंबर लिखा था। उसे समझते ज़रा भी वक्त नहीं लगा की वो किसका थी।

"तुम्हारे चाहने वालों का है, तुम रखो।" मोहिनी ने कुछ बेरुखे स्वर में कहा।

"फेंक दो। मैं तो यह टॉफियां लें ने गया था और यह केक भी।"

जैसे ही पार्किंग गेट पर पहुंचे, पास की झुग्गी में रहने वाले बच्चों ने रवि को घेर लिया।

"यह रहा तुम सब का केक और यह रही टॉफियां। दीदी को हैप्पी बर्थडे बोलो। "

"हैप्पी बड्डे दीदी"

रवि का इतना कोमल स्वभाव देख कर शायद ही कोई पत्थर होता जो ना पिघलता। मोहिनी को भी अपने अंदर कुछ पिघलता सा महसूस हुआ।

~~

घूँघट

अगले दिन.....
शाम के छः बज रहे थे। मोहिनी बैंक से आकर बस रवि का इंतजार कर रही थी। बार बार कभी घड़ी को देखती कभी दरवाजे को, मन में जाने कितने भाव उमड़ रहे थे। मोहिनी की नज़र कभी दरवाज़े पर तो कभी घड़ी की सुइंयों पर जा कर रुक जाती थी। जब सात बजे भी रवि नहीं आया तो मोहिनी कुछ असमंजस में पड़ गई।

'उफ्फ यह रवि क्यूं नहीं आया अब तक, रोज़ तो आ जाता था। मैं तो कल के लिए उसे धन्यवाद भी नहीं कह पाई। कैसे कहती, उसने एक दम से मुझे चौंका दिया था। मैं भी ना, क्या ज़रूरत थी मुझे उसे गले लगने की, ज़रा ज़रा सी बातों पर मैं खुद पर नियंत्रण खो देती हूं। हो सकता है उसे बुरा लग गया हो। उसे शुक्रिया कहने के लिए, यह रस मलाई भी बना ली। क्या करूँ इसका? अगर वो नहीं आया तो मैं उसे जाकर दे आऊंगी।'

चाय का कप सिंक में डालते हुए मोहिनी यह सब सोच रही थी कि घड़ी ने साढ़े सात का ठप्पा लगाया। मोहिनी ने रवि के घर जाने का निश्चय कर लिया। जैसे ही वो रवि के घर पहुंची तो देखा दरवाज़ा खुला था। किचन में विमला खाना बना रही थी। उसने कटोरा काउंटर पर रखा। उसकी आहट सुनकर विमला सकपका गई। लगा जैसे चोर की चोरी पकड़ी गई। वो अपने मुंह को घूंघट से छुपाने लगी। हड़बड़ाहट में रखे हुए बर्तन को दोबारा रखने लगी। मोहिनी ने पहली मुलाक़ात की झिझक समझ कर जाने दिया।

"रवि कहां है?" मोहिनी ने अपने स्वर की नरमी से उसका संकोच दूर करना चाहा।

मोहिनी को खुद से सवाल करता देख कर वो और डर गई।

"भईया नहा रहे हैं। "

"अरे, मोहिनी! आप आए हमारे गरीब खाने पर,कभी हम खुद को और कभी हम चाय को देखते है। कहो, कैसे आना हुआ ?" मोहिनी ने रवि को देखा तो आंखे खुली रह गई। वो बस... तौलिए में खड़ा था। एक पल के लिए मोहिनी को अपनी उम्र का ही ख्याल नहीं रहा। जब ख्याल आया तो मुंह फेर लिया।

" तुम आए नहीं शाम को तो मैं ही चली आई। कल की शाम के लिए शुक्रिया कहना था। रस मलाई बनाई थी, सोचा तुम्हें भी खिला दूं। खा कर बताना कैसे हैं ?"

"विमला, ज़रा चाय बनाना दो कप" रवि ने विमला को हुक्म फरमाया। " मोना, आज की चाय मेरे घर। तुम बैठो, मैं कपड़े पहन कर आता हूं।"

"चलो, तुम्हें होश तो आया" मोहिनी मुंह चढ़ा कर बोली।

मोहिनी सोफे पर बैठ गई। मोहिनी की नज़रें ना जाने क्यों बार बार उस डरी, सहमी खाना बनाने वाली पर अटकती जाती थी और वो हर बार उसके घूंघट के नीचे छुपे हुए चेहरे को देखने की हताश कोशिश करती।

" धारा 294 और तीन महीने की जेल "

रवि की आवाज़ से उसका ध्यान टूटा।

"क्या?" मोहिनी ने ऐसे पूछा जैसे वहां उसके अलावा भी कई सारे लोग मौजूद थे

और रवि किसी और से बात कर रहा था।

"किसी भी महिला को उसकी मर्ज़ी के बिना 14 सेकंड सेकंड से ज्यादा घूरने पर 3 महीने की जेल हो सकती है। ऐसा मैं नहीं भारत का कानून कहता है। तुम तो विमला को आधे घंटे से घूर रही हो। तुम्हारी 5 साल की सजा तो 5 मिनट पहले ही पक्की हो गई थी। बाकी हिसाब तुम खुद कर लेना।"

"तुम आए क्यों नहीं? "

"विमला की वजह से, पहले यह आठ बजे आती थी। फिर कल इसकी बेटी बोलने आई कि मम्मी शाम को खाना बनाया करेंगी। मैं तुम्हारे घर आने ही वाला था।" रवि ने चाय का कप पकड़ते हुए कहा।

"चाय में तो शक्कर नहीं है। ज़रा शक्कर मंगवाना तो। यह हमेशा ही घूँघट में रहती है या मुझसे पर्दा है?" मोहिनी चाय की प्याली को दोबारा मेज पर रखते हुए बोली।

"यह महीने के 20 दिन घूँघट में आती है और बाकी दिन खूब बोलती है। इसका तुमसे कोई लेना देना नहीं है। अच्छा तुम मेरे साथ बाज़ार चलो।"

"क्यों?" मोहिनी के बिस्किट खाते हुए बोला।

"आम खाओ मेरी जान पेड़ को जाने दो। तुम बैठो, हम अभी चल रहे हैं। मैं अभी कपड़े और पर्स ले कर आया।"

मोहिनी को विमला कुछ जानी पहचानी सी लग रही थी। रवि भले ही विमला के घूँघट की समस्या ना जानता हो मगर मोहिनी उसकी समस्या जानती थी और तो और वो तो उसकी पुरानी मरीज रह चुकी थी।

~~

सबक

24 जून 2011

मोहिनी प्रशांत के साथ करोल बाग में रहती है। प्रशांत पराग फैक्ट्री में मैनेजर पद पर कार्यरत है। कंपनी से अच्छी आय के साथ साथ गाड़ी भी मिली है। प्रशांत ने तो बस किराए का मकान लिया था, उसे घर तो मोहिनी ने बनाया है। घर की एक एक सज्जा मोहिनी ने अपने हाथों से संजोई है।

रात के दस बज रहे हैं। खाने की मेज पर खाना सजा है। मोहिनी वहीं मसंद के सहारे लेटे हुए प्रशांत की राह तक रही हैं। यह मोहिनी का छठवां महीना चल रहा है। डॉक्टर के अनुसार मोहिनी को समय पर खाना और दवा लेनी पड़ेगी। पर वो पढ़ा लिखा जाहिल डॉक्टर क्या जाने, भारतीय पत्नी के धर्म को और इसको कि पति से पहले पत्नी को खाने का कोई हक नहीं है।

पता नहीं कहां रह गए ये, ऑफिस तो 5 बजे ही ख़तम हो जाता था। आ जाते तो खाना खा लेते। एक फोन ही कर दिया होता। रीमा तो बता रही थी आज हाफ डे था। यही ख़्याल बुनते बुनते कब उसकी आंखों में नींद भर गई पता ही ना चला।

दरवाज़े पर किसी के खटखटाने की आवाज़ हुई। घड़ी देखी तो पौने बारह हो रहा था। मोहिनी की नींद सहसा टूटी। दिमाग़ की नसों से नींद जाने पर एकटक एहसास हुआ

कि प्रशांत दरवाज़ा पीट रहा है। मोहिनी ने भाग कर दरवाज़ा खोला तो आंखे खुली ही रह गई। प्रशांत नशे में चूर था और मोहिनी के दरवाज़ा देरी से खोलने की वज़ह से गुस्से से लाल था।

"वो आंख लग गई थी मेरी। आप कहां फंस गए ऑफिस के बाद!" मोहिनी मिमियाते हुए बोली। प्रशांत इस समय टाइम बॉम्ब के जैसा था जो कभी भी फट सकता था। मोहिनी ने उससे चार हाथ की दूरी बना कर बात करना उचित समझा।

"तुझे एहसास है मैं कब से दरवाज़ा पीट रहा हूं? मेरी मीटिंग थी" प्रशांत का गुस्सा चरम पर था।

"पर आपका ऑफिस तो पांच बजे ख़तम हो गया था"

मोहिनी इस बात को कहने में इतना डरी हुई थी कि दीवार की तरफ मुंह कर चुकी थी और उसे तनिक भी खबर नहीं हुई कब प्रशांत और उसके बीच का फासला कम हो गया और मोहिनी मुड़ी प्रशांत ने उसके गाल पर ज़ोर का चांटा जमाया। चांटे में आवाज़ से ज्यादा बल था। मोहिनी दो पल को जैसे बहरी हो गई। कान में सीटी सी बजने लगी। इससे पहले मोहिनी के दिमाग की घोड़ी कुछ कदम भी चल पाती, प्रशांत ने उसका जूड़ा पकड़ा और घसीटते हुए बरामदे की फर्श पर ला पटका।

"तू मेरी जासूसी करती है? कमीनी! आज तुझे ऐसा सबक दूंगा कि तू अगली बार पूछने से पहले दस बार सोचेगी।" घसीटते हुए बोला।

"मै नीचे सब्जी ले रही थी तो मुझे रीमा मिली। मैने नहीं पूछा था,उसने खुद..."मोहिनी अभी हाथ जोड़ ही रही थी कि प्रशांत ने उसके बदन पर एक बेल्ट जमाई।

"बोल अब हरामजादी? मेरी जासूसी करेगी? हां! घूम रहा था मैं क्या कर लेगी मेरा। तुझे खिला रहा हूं यह काफी नहीं है छीनाल" प्रशांत के शब्द और हाथों में से कौन ज्यादा तेज चल रहा था बता पाना मुश्किल था मगर मोहिनी के आंसू जिस गति से बह रहे थे उससे उसकी शारीरिक पीढ़ा का अंदाज़ा लगाना कोई मेहनत का काम नहीं था। मोहिनी के हाथ उस हालत में भी खुद के लिए नहीं ना उठकर अपने होने वाले अजन्मे बच्चे की सुरक्षा में बढ़े। उसने लाख प्रयास किया कि प्रशांत की बेल्ट उसकी कोख तक ना पहुंच पाए पर उसका एक प्रयास भी कामयाब नहीं हुआ। प्रशांत ने उसके और उसकी कोख के साथ कोई भेदभाव नहीं किया और दोनों को एक समान ज़ख्म दिए। यह मां की ममता ही कहेंगे कि ज़मीन पर असहाय हाल में भी मोहिनी को खुद से ज्यादा अपने अंश की फ़िक्र थी और नशे में धुत्त प्रशांत को अजन्मे बच्चे का तो क्या खुद का भी होश नहीं था। आखिर ऐसा क्यों होता है कि अक्सर हम शराब पीने के बाद की सारी बद्तमीज़ियों का इल्ज़ाम नशे को दे देते है, क्या सच में उस भरी बोतल की उतनी गलती होती है जितनी हम कहते हैं।

प्रशांत की बेल्ट तब नहीं रुकी जब मोहिनी अधमरी हो गई बल्कि तब रुकी जब वो थक गया। नशे के आवेश में प्रशांत वहीं सोफे पर जा कर सो गया। मोहिनी बेहोशी में थी, उसके हिसाब से तो वो कब का स्वर्ग सिधार चुकी थी। जमीन पर उस अवस्था में कब तक पड़ी रही, कहना मुश्किल था लेकिन जब थोड़ी जान आयी तो मोहिनी ने उठने का साहस जुटाया। अपने ही शरीर को महसूस करने के लिए उसने जब हाथ लगाया तो पता चला बेल्टों के ज़ख्म खून निकाल चुके थे। गर्दन उठा कर देखा तो होश उड़ गए। ज़मीन पर

बिखरा खून कुछ और ही कहानी बयां कर रहा था। खून की धार पानी के समान बह रही थी।

"मेरा बच्चा! प्रशांत! देखो यह क्या हुआ! प्रशांत उठो? " प्रशांत को रोते रोते उसने पुकार मारी। उसने दोबारा साहस जुटाया और ज़ोर से चीख मारी। प्रशांत उस समय इतने गहरे नशे में था कि उठना तो दूर वो चीख उसे छू कर भी निकलने में असमर्थ थी। मोहिनी तैसे ज़मीन पर सरकती हुई प्रशांत की जेब से जैसे तैसे फोन निकाल पाई। जो नंबर पहला था उसी को मिला दिया। किस्मत से वो शगुन को मिला। घंटी बजती रही मगर फोन नहीं उठा।रोते और कांपते हाथों से रीमा का नंबर लगाया। घंटी पूरी बज नहीं पाई कि फोन उठ गया।

" हां प्रशांत? इतनी रा...."

"रीमा! मैं मोहिनी, तू घर आ.." मोहिनी ने बिलखते और गिड़गिड़ाते हुए रीमा से विनती की।

"मोहिनी? क्या हुआ? तू रो क्यों रही है?”

"शगुन को भी लेते आ..." इतना कहते ही वो निढाल हो गई।

शगुन और रीमा नीचे पहली मंज़िल पर रहते थे।शगुन प्रशांत के साथ कार्यरत था। रीमा बैंक में नौकरी करती थी।कंपनी की सालाना होने वाली पार्टी में मोहिनी और रीमा की दोस्ती हो गई। रीमा कोई भारतीय अबला नहीं थी जिसे लोग क्या कहेंगे से रत्ती असर होता बल्कि उसे समाज के रीति रिवाज बांधने में असक्षम थे। रीमा कई मौकों पर प्रशांत के मुंह का पानी उतार चुकी थी जिस वजह से प्रशांत को वो फूटी आंख नहीं सुहाती थी।

रीमा को मोहिनी के घर पर सब कुछ देखने के बाद वहां घटे हुए घटनाक्रम को समझने में तनिक भी समय नहीं लगा। रीमा ने फौरन शगुन को एंबुलेंस बुलाने का फरमान सुनाया। पानी की छिंटो से मोहिनी की आंखे हल्की खुली।

"दूसरी कॉल पुलिस को लगाओ" रीमा ने शगुन को सरकारी फरमान सुनाया।

"पुलिस नहीं" मोहिनी ने शरीर सारा बचा खुचा जोर लगा कर कहा।

रीमा की छोटी बहन का नाम रिया था। वो किसी बड़े अस्पताल में डॉक्टर थी। अस्पताल में पहुंचने पर.....

"दीदी! यह पुलिस केस है। ऐसे भर्ती नहीं कर सकते। अमन नहीं मानेगा" रिया ने अपनी विवशता जताते हुए कहा।

"रियू प्रशांत मेरा दोस्त है। पुलिस आयगी तो कंपनी का नाम खराब हो जाएगा। अमन तुम से प्यार करता है, तुम समझाओगी मान जाएगा।" शगुन ने विनती की।

"जीजू तुमने हालत देखी है उस औरत की? अंधा भी कह देगा, घरेलू हिंसा का मामला है। मेरी नौकरी जाएगी और अस्पताल का लाइसेंस जाएगा वो अलग से।" रिया ने झल्लाते हुए कहा। मोहिनी की हालत देख कर रिया को तरस आ गया और उसने मोहिनी को आईसीयू में भर्ती कर लिया।

"अमन! मेरी जान, आज नहीं। मेरी नाइट शिफ्ट है। किसी दिन चलेंगे, पक्का।" मोहिनी की ड्रिप चेक करते हुए रिया ने कहा।

"मुझे आज ही जाना है। मेरे हॉस्पिटल का मालिक होने का क्या फायदा अगर मैं अपनी ही प्रेमिका के साथ एक पिक्चर देखने नहीं जा सकता। तुम्हारे लिए मैं मायने भी रखता हूं क्या?" अब माहौल मजाकिया से गंभीर हो गया था।

"हम दोनों को पता है तुम मेरे लिए क्या मायने रखते हो। रिया ने अमन को मनाने के लिए उसके गले में हाथ डाल कर कहा। उसके द्वारा किए हुए उस संकेत को अमन ने भी पूरे जोश के साथ प्रतिबिंबित किया और कमर में हाथ डाल कर रिया को खुद की ओर खींचा और अपने होंठो को रीया के सफेद कोट में से झांकती हुई उसकी गर्दन की नाज़ुक त्वचा पर रख कर उसे चूम कर चिढाने लगा।

"आज?" अब अमन के हाथ धीरे धीरे कमर से नीचे सरकते हुए उसके नितम्बों तक आ गए थे।

"मोहिनी को बेहोश हुए दो दिन हो गए हैं, छोड़ कर जाने का दिल नहीं करता" इतने में पीछे से कुछ आहट हुई। मोहिनी को होश आ चुका था। अमन सहसा अपनी जगह से ऐसे हटा मानो उसने दिन में भूत देख लिया हो।

"तुम्हें होश आ गया।" रिया भाग कर उसके पास आ कर चेक अप करने लगी मगर अपने गालों की लाली को छुपाने की लाख कोशिश के बाद भी नहीं छुपा सकी।

"मैं दी को बुलाती हूं।"

"डाक्टर रिया! मैं डॉक्टर सरफराज के केबिन में जा रहा हूं।" अमन ने माहौल को और अजीब बननें से बचाने के लिए कहा।

"मोहिनी! तुम्हें कैसा महसूस हो रहा है? कोई दर्द या भारीपन?" रिया ने कुछ पेशेवर अंदाज में कहा।

"कमजोरी और कुछ दर्द।"

"चलो मैं दवा में कुछ बदलाव करके चेक अप लिख देती हूं। अभी मैं चलती हूं।"

"रिया" मोहिनी ने आवाज़ दी। "माफ करना मैंने तुम्हारी बातें सुन ली। अब मैं बिल्कुल ठीक हूं। तुम मेरी फ़िक्र मत करो और जाओ।"

"अभी तुम आराम करो और मेरी फ़िक्र मत करो।"

मोहिनी रवि की आवाज़ से अतीत के थपेड़ों से बाहर आई। वो कार की चाभी लेकर खड़ा था। "मोहिनी? कहां खो गई तुम? चलो!"

~~

ज़ख्म

क्यों लेने हैं तुम्हें कपड़े? मोहिनी ने दुकान में घुसते ही रवि से पूछताछ शुरू कर दी।

"आखिरी बार मैंने तुम्हें बैंक के बाहर छोड़ा था। तुम ने सीआईडी कब ज्वॉइन की?" रवि ने बनावटी ढंग से कहा।

रवि साड़ी काउंटर पर पहुँचकर देखता है कि मोहिनी अब भी भीड़ में ऐसे फंसी हुई थी जैसे छोटे गले वाले स्वेटर को पहनने की कोशिश में हमारा सर अटक जाता है।

"ऐसा लगता है जैसे अपने साथ किसी पांच साल की बच्ची को ले आया हूं। वो हर बात पर सवाल करती है और नजर हटने पर खो जाती है।" कहते हुए उसने मोहिनी का

हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचा। मोहिनी ने जवाब में मुंह दूसरी ओर घुमा लिया। "और छोटी छोटी बात पर रूठ भी जाती है।"

"मैडम के लिए साड़ी दिखाऊं? भाईसाहब एक दम नया माल.. " साड़ी काउंटर पर साड़ी वाला बोल रहा था कि रवि बोला, "भैया। मैडम तो खुद ही माल है। आप साड़ी मेरी ताई जी के लिए दिखाओ।"

"मोना, यह साड़ी? मेरे पास शर्ट है ऐसी, अच्छी लगती है।" रवि ने साड़ी दिखाते हुए कहा।

"तुम्हें पता है तुम्हारी शर्ट अच्छी क्यूं लगती है क्यूंकि उस कपड़े की साड़ी भद्दी लगेगी, जैसे की यह।" मोहिनी ने साड़ी की तरफ इशारा करके कहा।

अचानक उन दोनों का हाथ एक ही साड़ी पर जा कर रुक गया। मोहिनी ने रवि की आंखो में देखा और उसे उसका जवाब मिल गया। "भैया यह बिल काउंटर पर पहुंचा दो" पास खड़े लड़के से मोहिनी ने कहा।

दुकान से निकल कर दोनों आईस क्रीम खाने के लिए ठेले पर रुके।

"रवि, कुछ और बताओ ना ताई जी के बारे में " मोहिनी ने पूछा।

"क्या बताऊं उनके बारे में अब में। जैसे सबकी ताई जी होती है वैसे ही मेरी भी है। कुछ गरम कुछ नरम। कभी मां कभी मौसी। कभी मार कभी प्यार। "

"तुम बचपन में अपने मां पापा के साथ नहीं रहते थे?" मोहिनी ने नर्म आवाज़ में पूछा।

मोहिनी के उस प्रश्न ने जैसे प्रशांत को किसी चोरी में रंगे हाथ पकड़ लिया। मोहिनी ने बात की संवेदना को समझा और उसे जाने दिया पर रवि के हाव भाव से वो समझ चुकी थी कि दुनिया के सामने मसखरे का भेष धरने वाला रवि अपने अंदर कई गहरे दुःख समेटे हुए है।

मोहिनी और रवि की महफ़िल को बस आइस क्रीम के ठेले वाला नहीं देख रहा था, कोई और भी था जो उन दोनों को दूर से देख रहा था। कुछ दूर किसी ठेले की आढ़ में, "हां वो इसी शहर में है और उसके साथ कोई लड़का भी है।" काले कपड़े और टोपी लगाए हुआ वो आदमी फोन पर किसी को मोहिनी और रवि की जानकारी देने लगा।

"वो मैं पता कर लूंगा। तुम कोई बेवकूफी मत करना।" वो आदमी रहस्यमई ढंग से गायब हो गया।

अगले दिन मोहिनी बैंक से निकल रही थी तो करुणा मिल गई। दोनों सहेलियां पास के ही कैफे पर कॉफी पीने चली गई।

"तू तो आज भी इक्कीस की दिखती है, मुझे तरस आता है तेरे पति पर इतनी खूबसूरत बीवी छोड़ दी बेचारे ने।" करुणा ने कॉफी पीते हुए कहा।

अपनी गलती का एहसास होने पर करुणा को तुंरत पछतावा हुआ। कॉफी का कप रखते हुए मोहिनी का हाथ पकड़ कर बोली-" मुझे माफ़ कर दो मोहिनी, मेरा वो मतलब नहीं था।"

"किट्टू कैसी बातें करती हो"

"आज से पहले मैं तुमसे आखिरी बार दिल्ली रेलवे स्टेशन पर मिली थी। मोहिनी

क्या हुआ तेरी ज़िन्दगी में उस मुलाकात के बाद? "

"कहानी लंबी और बोरिंग है, छोड़ ना।" मोहिनी ने खिड़की से बाहर पेड़ो को निहारते हुए कहा।

"मोहिनी, जब तक तू उन जख्मों को किसी से बांटेगी नहीं, वो तुझे चोट पहुंचाते रहेंगे।" करुणा ने चाय का खूंट पिया।

"झिल मिल कैसी है? कौन सी क्लास में है?" मोहिनी ने बात बदलते हुए पूछा।

"तेरे बात न करने से क्या मैं समझ नहीं पाऊंगी? कुछ कर मोहिनी अपनी तन्हाई की बीमारी का, इससे पहले कि यह तुझे निगल जाए" करुणा ने कहा।

शाम को मोहिनी के घर रवि आया। रवि उसकी डायनिंग टेबल पर रखी निर्मला देख रहा था कि उसमें से उमा की चिठ्ठी गिर गई। मोहिनी ने देखते ही उस के हाथ से वो चिट्ठी छीन ली।

"यह क्या था? तुम्हारे गुज़रे कल की कोई कहानी?"

रवि अभी अपना आखिरी वाक्य बोल भी नहीं पाया था कि मोहिनी ने अपना आपा खो दिया।

"क्यों जानना है सबको मेरे अतीत के बारे में? क्या एक दिन के लिए मैं अपने कल को बिना याद किए नहीं ज़ी सकती। इतना भी हक़ नहीं है मुझे? अगर वो कल इतना ही खूबसूरत होता तो क्यूं मैं उसे साथ नहीं ला पाई। नहीं करनी मुझे किसी से बात, नहीं हूं मैं तन्हा, अगर हूं भी तो खुश हूं। छोड़ क्यों नहीं देते लोग मुझे मेरे हाल पर।"

मोहिनी ने किचन की स्लैब पर अपने दोनों हाथों के बीच में अपना सर रख लिया। कुछ देर जवाब ना मिलने पर रवि ने उसकी चुप्पी में अपना जवाब ढूंढ लिया।

" मैं जा रहा हूं इसलिए नहीं क्यों कि तुम चाहती हो पर इसलिए कि तुम जख्मी हो और कुछ जख्मों का इलाज सिर्फ वक्त कर सकता है। जब तुम्हारा मूड सही हो जाए, तुम्हें पता है मैं कहां मिलूंगा।"

रवि चला गया। मोहिनी उस हालत में कब तक बैठी रही, याद नहीं। उसके कानों में गूंज रहे थे, आंखों से आंसू बह रहे थे और दिल में भावनाओं का ज्वाला उमड़ रहा था।

कब तक कल के अतीत से तू यूं ही घबराती रहेगी

मोहिनी तुम जख्मी हो

हां! मैं जख्मी हूं। अगर वक्त के पास हर ज़ख्म का इलाज़ है तो मेरे ज़ख्म क्यों ठीक नहीं हुए? क्यूं अब भी मुझे वो सब याद है। लाख कोशिश के बाद भी क्यूं मैं वो सब भूल नहीं पाती हूं। रवि, कैसे लड़ूं अपने अतीत से, उनकी यादों से?

ना चाहते हुए भी मोहिनी को वो सब याद आने लगा जिसे वो भूल जाना चाहती थी।

~~

सफ़र

दिल्ली की कंपाने वाली ठंड। सुबह का समय। मोहिनी स्टेशन की बेंच पर बैठी है। प्रशान्त उसे स्टेशन पर लेट पहुंचने के लिए खरी खोटी सुना रहा है।

"खा खा कर चर्बी चढ़ गई है तो काम होगा कहां से"

"प्रशान्त धीरे बोलिए ना, सब देख रहे हैं " मोहिनी ने प्रशांत के गुस्से के वेग को कम करने का प्रयास किया।

"चुप रह हरामजादी।"

मोहिनी ने प्रशांत की तरफ ना देख कर दूसरी दिशा में देखना बेहतर समझा। उसे कोई जाना पहचाना चेहरा मालूम हुआ, पास आकर वो मोहिनी की बचपन की सहेली करुणा निकली।

शादी का लाल चूड़ा सिंदू, हल्की सी शर्म, कुछ रची-उतरी मेहंदी, करुणा में नई नवेली दुल्हन की सारी निशानियां थी। करुणा अपने पति, राम के साथ साल की पहली बर्फ का मज़ा लेने कुल्लू जा रही थी। राम देखने में सजीला, सुडौल, गोरे रंग का नौकरी में कार्यरत था। प्रशान्त की नज़रे करुणा की जिस तरीके से तलाशी ले रही थीं, मोहिनी उससे अनजान नहीं थी। प्रशांत की यह हरकत राम की पैनी आंखों से भी नहीं बच पाई थी और मोहिनी तो जैसे वहीं शर्म के मारे पानी पानी हो रही थी।

"मोहिनी! कैसी है तू? शादी में क्यों ना आई? राम, यह मेरे बचपन की सबसे अच्छी सहेली है।" करुणा ने राम का ध्यान अपनी तरफ करते हुए कहा।राम ने भरी मुस्कान से मोहिनी का अभिवादन किया।

"नमस्ते राम, यह प्रशान्त हैं।" मोहिनी ने प्रशांत का परिचय देते हुए कहा।

"मोहिनी, यह चोट कैसे लगी तुझे? डॉक्टर के पास ले कर नहीं गए तुम इसे प्रशांत?" करुणा ने मोहिनी के हाथों पर निशान देख कर कहा।

"गिर गई थी बाथरूम में। छोटी सी है। प्रशांत तो काफी परेशान हो गए थे। मुझसे ज्यादा तो यह तकलीफ में थे।" मोहिनी ने प्रशांत की तरफ देखते हुए कहा।

"लगता है आपके पति आपके प्यार में काफी पागल है। किसी और औरत को तो देखते भी नहीं होगे।" राम ने प्रशांत की ओर देखकर कहा। उसकी आवाज़ में व्यंग्य साफ झलक रहा था।

उसके जाते ही मोहिनी की आंख के आंसू सहसा बहने लगे। सच तो था, मोहिनी को चोट और ज़ख्म की आदत कहां थी मगर अब देखो, हाथ के जले हुए निशान को चोट का नाम दे रही है। बेल्टों के निशान फूल ब्लाउज से छुपा रही है। पैर के दर्द को पेन किलर से दबा रही है। वक्त जो ना कराए थोड़ा है।

ट्रेन आई, मोहिनी फर्स्ट एसी की बोगी में जा कर बैठ गई। अपने हाथ की चोट को देख रही थी। दो दिन पहले ही प्रशांत ने उसे नीली की जगह हरी शर्ट इस्त्री करने की सजा उसके हाथ को उसी इस्त्री से जला कर दी थी।

उसका मन अभी उस आग की जलन को महसूस कर ही रहा था कि प्रशान्त उसके पास आ कर बैठ गया। धीरे धीरे उसका हाथ मोहिनी की कमर से उस की जांघों की तरफ बढ़ने लगा। मोहिनी को भली भांति पता था अब क्या होने वाला है।

मोहिनी के आखिरी गर्भपात के बाद से उसका स्तर शारीरिक तौर पर काफी गिर गया था। आखिरी बार का हादसा उसकी मां बनने की क्षमता पर भी आघात कर गया था। रिया ने बोला था कि प्रशांत और मोहिनी को कोशिश करते रहना चाहिए। मोहिनी की मां

को लगता था मोहिनी खट्टा कम खाती है इसलिए गर्भ नहीं लें पा रही। रीमा को लगता था कि मोहिनी सोचती ज्यादा है इसलिए उसके हार्मोन साथ नहीं दे रहे। वहीं मोहिनी की सास को लगता था ग्वालियर जाकर उसकी हवा बदलेगी तो मोहिनी प्रेगनेंट भी हो जाएगी। भारत में वैसे भी हर शख्स बिना डिग्री का डॉक्टर था और खुद को डॉक्टर से ऊपर समझता था। कुल मिला कर मोहिनी को छोड़ कर सबके पास कोई ना कोई राय थी प्रशांत को देने के लिए।

कोशिश के नाम पर प्रशांत ने मोहिनी को जैसे जिस्मानी गुलाम बना लिया था। उसकी जैसे मर्ज़ी होती थी वैसे मोहिनी की दुर्दशा कर लेता था। ना कहने का हक़ तो मोहिनी ने शादी के दिन ही खो दिया था पर अब रिया की हरी झंडी ने प्रशांत की हवस को टालने का अधिकार भी मोहिनी से छीन लिया। ट्रेन की बोगी में भी प्रशांत ने वहीं 'कोशिश' की।

घर पहुंचने पर सभी प्रशांत का गरम जोशी से स्वागत करने लगे।

"तुम्हारी बड़ी याद आती थी, उमा।" मोहिनी ने उमा से भरे गले से कहा। मोहिनी उमा के साथ दूसरे कमरे में चली गई। प्रशान्त अपने मां बाप के साथ बैठक में चाय नाश्ता करने लगा।

"प्रशांत! मोहिनी कितनी मोटी हो गई है। लगता है तू अपनी लुगाई का ज्यादा ही ख्याल रख रहा है।" प्रशान्त के पापा ने प्रशांत का मज़ाक बनाया।

दूसरे कमरे में बैठ कर उमा मोहिनी के घाव पर मरहम लगा कर पट्टी करने लगी।

"कब किया दादा ने यह?" उमा ने दर्द भरे स्वर में पूछा।

बैठक की आवाज़ इस कमरे तक आ रही थी रहे थे। उमा के पूछते ही मोहिनी उमा के कंधे पर रोने लगी।

"उमा। मैंने अपना बच्चा खो दिया। मैं प्रशांत की बस बाजारू बन कर रह गई हूं। हर छोटी बात पर जानवरों के जैसे मारता है। लाश सी हूं सिवाय इसके कि मेरी सांसे चल रही है।" मोहिनी रोते रोते बोली।

"मोना! परेशान मत हो। रात चाहे जितनी काली हो, सुबह तो आनी ही है। सब्र रखो।" कह कर उमा ने मोहिनी को गले से लगा लिया।

"यहां बैठी दोनों प्रपंच कर रही हैं। महारानी उठो और काम करो चल कर।" प्रशान्त की मां की आवाज़ से दोनों का ध्यान टूटा।

मोहिनी गुज़रे वक्त से बचने के लिए बालकनी में खड़ी हो गई।

~~

इलाज़

शाम के पांच बजे रहे थे। मोहिनी बैंक से निकली तो देखा रवि खड़ा हुआ था। शायद वो उसका इंतज़ार कर रहा था। लेकिन वो इंतज़ार नहीं कर रहा था वो तो किसी लड़की से बातें कर रहा था। शायद वो तृप्ति थी। स्कूटी के हैंडल पर जिस चाव से वो बात कर रहा था उससे पुरानी जान पहचान मालूम पड़ रहीं थी।

मोहिनी ने मुड़ कर दूसरे रास्ते से मुड़ कर जाने में ही अपनी भलाई समझी।

"मोना.. मैं इधर खड़ा हूं, तुम उधर कहां जा रही हो?" पीछे से प्रशान्त ने आवाज़ लगाई।

"बिल्कुल, मैं कैसे भूल सकती हूं।" मोहिनी ने बनावटी आवाज़ में खुद से कहा।

“अरे क्या बुदबुदाती रहती है यह लड़की भी, (तृप्ति को देख कर) तृप्ति जी मैं चलता हूं" रवि ने तृप्ति को लुभाते हुए कहा, "अब तो आना जाना लगा रहेगा।"

मोहिनी ने आंखे मटका कर अपनी उपस्थति का एहसास कराया। रवि स्कूटी मोड़ कर मोहिनी के पास लाता है और उसे बैठने का इशारा करता है।

"कहां भाई साहब? आज ना मेरा जन्मदिन है ना तुम्हारा, मैं नहीं चल रही। घर जाइए सर।" मोहिनी ने आंखे तरेर कर कहा और सीधे चलने लगी। रवि ने भद्दी आवाज़ में गाना शुरू कर दिया।

“दिलबर मेरे कब तक मुझे यूँ ही तड़पाओगे..” अब सड़क पर मौजूद सभी लोगों का ध्यान उन्हीं दोनों पर था।

"रवि, क्यों तमाशा कर रहे हो, जाओ बाबा।” मोहिनी के मना करने पर वो ओर तेज़ गाने लगा। रवि ने गाना गाते हुए ही मोहिनी को स्कूटी पर बैठने का इशारा किया। इस बार मोहिनी भी बैठ गई।

"तुम्हें पता है तुम कितना बेहूदा गाते हो?" मोहिनी ने रवि से कहा।

"वो तो पता है।" रवि ने स्कूटी चलाते हुए जवाब दिया।

"और फिर भी गाते हो?"

रवि वहीं बर्गर किंग पर रुक गया।

"तुम मेरी बैंक के बाहर क्या कर रहे थे?" मोहिनी ने बर्गर का निवाला लेते हुए कहा।

"तुम्हें लेने आया था और जानने के लिए कि कल तुम्हें क्या हुआ था।" रवि ने बिल पर अपना ऑर्डर नंबर देखते हुआ कहा।

"तुम्हारा ऑर्डर नंबर आ गया है" मोहिनी ने रवि को बताया।

"जिसका मतलब है नहीं, जैसी सरकार की मर्ज़ी।" कहते हुए वो ऑर्डर लाने चला गया। मोहिनी ने रवि की बातों का जवाब देने से ज्यादा बर्गर खाना जरूरी समझा।

अचानक रवि की नजर काली टोपी लगाए उस आदमी पर गई जो उन्हें ही देख रहा था। रवि के देखते ही उसने अपनी गर्दन घुमा ली। ना जाने क्यों रवि को ऐसा लगा जैसे उसने उसे पहले भी कहीं देखा हो।

रात के पौने नौ बज रहे है। मोहिनी नाईट सूट में बैठी हुई कोई उपन्यास में मग्न

है। दरवाज़े की घंटी बजती है। इतनी रात को कौन आ सकता है मेरे यहां? शायद पड़ोस के घर की होगी। मोहिनी ने उसे नजरअंदाज करना ही उचित समझा।

" मोना, मोना। दरवाज़ा खोलो?" यह रवि की आवाज़ थी और मगर वो इतना परेशान क्यों है? मोहिनी जल्दी से दरवाज़े की तरफ भागी। "क्या हुआ रवि? तुम इतने परेशान क्यों हो?"

"मोहिनी विमला नहीं आई। ताई की फ्लाईट साढ़े बारह बजे आ जायेगी। तब तो कोई रेस्त्रां भी नहीं खुला होगा। मैं क्या करूँ?" अंदर घुसते घुसते रवि ने बोलना शुरू कर दिया।

"ठाकुर तो गयो भाया" मोहिनी ने उसे छेड़ते हुए कहा।

"मोहिनी?" रवि ने चिड़ते हुए कहा

"चलो अब अपने घर।" बालों को रबर बैंड में बांधते हुए मोहिनी बोली।

"मोहिनी जो तुम ना होती तो क्या होता मेरा" लिफ्ट में रवि ने मोहिनी से कहा।

"साड़ी वाले शोरूम में तो तुम कुछ और कह रहे थे ना, मैं पांच साल की बच्ची और क्या बोल रहे थे तुम याद दिलाओ जरा?"

"मैं? नहीं तो। हम कब गए साड़ी लेने , किसी और के साथ गई होगी तुम। मेरा तो ऑफिस था।" रवि ने नकली भाव के साथ कहा।

"हां याद आया। मैं खो जाती हूं.. औ.... "

"ना ना मोना। मैं था ही नहीं।" रवि ने मासूम सा चेहरा बना कर कहा। "कोई और होगा।"

"पनीर, दूध, दही, बूंदी?" फ्रिज देखते हुए बोली, "चलो अब मुझे काम करने दो। हां और एक चीज़, मुफ्त की सलाह, घर साफ कर लो क्यों कि अगर आपकी ताई जी ने घर साफ किया तो आपको बिना दीवाली के आतिशबाजी देखने को मिल सकती है." फ्रिज के नीचे पड़ी हील की स्ट्रैप उठाते हुए बोली, "सलाह देना मेरा काम है लेना ना लेना तो तुम्हारा है।"

"एक तो तुम मुझे डराना बंद करो।" रवि उसके हाथ से सैंडल छीनते हुए बोला।

"अच्छा मैं जा रही हूं।" मोहिनी जब किचन से निकली तो देखा रवि तो टीवी देख रहा है। "और मुझे पता नहीं क्यों लगा कि तुम शायद सफाई कर रहे होगे।" मोहिनी रवि के पास आ कर बोली।

"दुनिया में दो तरीके के लोग होते है, एक जो सफाई कर सकते है और एक जो नहीं करते है। मैं दूसरा हूं।"

"बिल्कुल" मोहिनी पास में पड़ी टॉवल को उठा कर मुंह से दूर रखते हुए ही बोली।

"अरे रुको ना। मूवी चल रही है।"इतना कहते ही रवि ने मोहिनी का हाथ खींच लिया। अचानक हुए इस खिंचाव से मोहिनी लड़खड़ा कर रवि के ऊपर जा गिरी। दोनों की आंखे टकराई और मोहिनी के लंबे बाल रवि के मुंह पर बिखर गए। उस लम्हें ने आस पास की हवा को बदल सा दिया मगर इतना नहीं की मोहिनी के विवेक पर हावी हो जाता। मोहिनी ने तुरन्त रवि के ऊपर से उठने का प्रयास किया मगर उसके लंबे बाल उसकी टी

शर्ट की बटन में फंस गए। मोहिनी ने जल्दी में बाल खींचे मगर वो ना निकले। मोहिनी ने दोबारा खींचा, कोई नतीजा नहीं। अब मोहिनी को गुस्सा आ रहा था। वो जितना बालों को खींच रही थी वो और उलझ कर मोहिनी को दर्द दे रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे मोहिनी के ही केश मोहिनी को चिढ़ा रहे हो।

मोहिनी की इस जद्दोजहद को देख के रवि पहले तो हंसा फिर उल्टे हाथ से मोहिनी के दोनों हाथ पकड़ कर सीधे हाथ से एक झटके में उसने उसके बाल और अपनी टी शर्ट का रिश्ते का ख़तम कर दिया।

"थैंक्स" मोहिनी से बस इतना ही कहते बना। मोहिनी थकी हुए थी, कब आंख लग गई उसे खबर ही नहीं हुई। मूवी तो बस नाम के लिए चल रही थी। मोहिनी का सर रवि के हाथ पर और रवि की आंखे मोहिनी के शांत चेहरे को ढंकती हुई उसकी जुल्फों पर। उस रात ने उनके बीच के रिश्ते को कुछ हद तक बदल दिया था। रवि के मन में मोहिनी अब बस सिर्फ एक दोस्त नहीं थी। पर रवि को मोहिनी से प्यार था, यह कहना रवि के दिमाग के लिए मुश्किल था।

रात के ग्यारह बज रहे हैं। रवि ने मोहिनी का सर हटा कर जैसे ही सोफे पर रखा मोहिनी की आंख खुल गई।

"माफ़ करना मैं यही सो गई" मोहिनी ने आंखे मलते हुए कहा और उठकर मोहिनी चली गई।

सुबह मोहिनी जब बैंक पहुंची तो देखा कि उसके कान का एक कुंडल गायब था। उसे समझने में तनिक भी देर नहीं लगी कि वो कुंडल कब और कहा गिरा। उसके आंखों के सामने पूरा लम्हा जैसे दोबारा चल गया और उसके मुख पर एक भीनी सी मुस्कान आ गई। जब रवि ने उसके बालों को बटन से अलग किया तभी उसका कुंडल गिरा होगा। मन में ही उसने रवि से कुंडल वापस लेने का निश्चय किया। वो इन ख्यालों में इतना खोई थी कि तृप्ति कब उसके ऑफिस में दाखिल हो गई पता ही नहीं चला।

"मैम, आपके साइन चाहिए थे।" कहकर तृप्ति फाइल खोलने लगी। लेकिन जब मोहिनी की कलम फिर भी ना चली तो उसने सर उठा कर देखा कि बात क्या है। "मैम" उसने मोहिनी के कंधे हिला कर मोहिनी के कान में चीखा।

"हां? क्या हुआ? चीख क्यों रही हो? मै बहरी नहीं हुई हूं अभी। तुम कब आई ऑफिस में?" मोहिनी ने खुद को इक्कठा करके कहा।

"मैम, साइन" तृप्ति ने मोहिनी को फिर से याद दिलाया, इस बार कुछ मजाकिया अंदाज़ में। मोहिनी ने फाइल दे कर उसे चलता किया।

शाम को जब वो लिफ्ट से निकल रही थी तो उसे विमला दिखी। बस आज उसने घूंघट से गर्दन छुपा रखी थी। मोहिनी को उसकी कहानी की पहचान करने में एक क्षण भी नहीं लगा।

"विमला? वो मुझे रवि की ताई जी के लिए मिठाई देनी थी। तू मेरे घर चल मैं तुझे डिब्बा पकड़ा देती हूं।" मोहिनी ने विमला के पास जाकर कहा।

"दीदी वो....मु.." अप्रत्याशित सवाल आ जाने से विमला घबरा गई। उसे बला टालने को कुछ सूझा नहीं।

"अरे बस दो सेकंड, चल कर ले ले।" मोहिनी ने आग्रह किया। विमला डरे मन से उसके पीछे चलने लगी। घर पहुंच कर मोहिनी ने विमला को बैठने को कहा।

जब दस मिनट होने पर भी मोहिनी नहीं आई तो विमला बैचेन हो गई कि देखा मोहिनी चाय के कप के साथ आ रही थी।

"कब से चल रहा है यह?" मोहिनी विमला को चाय देती हुई बोली।

"क्या दीदी?" विमला हैरान हो कर बोली।

इस बार मोहिनी ने उसकी गर्दन से पल्लू हटा दिया।

"दीदी यह तो हम गिर गए थे। छोटी वाली को खाना खिला रहे थे, वो भाग रही थी। हमारा पैर फिसल गया। यह बच्चे भी ना " झूठी हंसी हंसते हुए बोली।

"विमला! यह लकड़ी के डंडे के निशान है और यह बेल्ट के है (उसका हाथ पलट कर दिखाते हुए) तू जब तक सहेगी वो तुझे सताएगा। आवाज़ उठा।" ज़ख्म इतने गहरे थे कि मोहिनी से देखे नहीं जा रहे थे।

"दीदी, ऐसा नहीं है। वो तो हमारी ही ग़लतियाँ होती हैं। कभी घर लेट पहुंचते है, कभी उनके कपड़े धोना भूल जाते हैं। उनका बस गुस्सा तेज़ है वरना वो हमें बहुत प्यार करते है।"

"तू कमा रही है तो क्यूं झेल रही है। तू चाहती है तेरी लड़कियां भी तेरे जैसी कमज़ोर बने। उनके पति भी उन्हें जानवरों के जैसे मारे पर प्यार करे। तू बता?" बेटियों को नाम सुन कर विमला रोने लगी। अब तक जो वो सब कुछ ठीक होने का दिखावा कर रही थी वो और नहीं कर सकती थी।

"दीदी, बच्चियों के लिए तो यह सब सह रहे हैं। वो बड़े दफ्तर में सिक्योरिटी गार्ड है। वो दारू पीकर हमें मारे तो भी ठीक और हमारा सब्जी में ज़रा सा नमक तेज़ करना भी पाप है क्योंकि वो हमें पाल रहे है। हमारी तीन लड़कियां है। आपकी तरह पढ़े लिखे नहीं है। बस अचार पापड़ ही तो बनाना जानते है। क्या करें अगर उन की नहीं सुने। हमें कौन खिलाएगा,, कौन रखेगा। उनकी मां कहती है दूसरी शादी कर देंगी। दीदी, हम किससे कहें? मां बाप पहले ही गरीब हैं। दीदी इस दुनिया में कोठे पर बैठने वाली औरत रण्डी कहलाती है और कोठे पर जाने वाले मर्द शौकीन कहलाते हैं। कौन सुनेगा हमारी" इतना कहते ही वो फूट फूट कर रोने लगी। विमला में मोहिनी को खुद की छवि नजर आती थी।

"सच है कि मर्दों को अपना सिक्का चलाने के लिए बस मूंछ चाहिए होती है मगर औरत को अपनी बात कहने भर के लिए आत्मनिर्भर होना पड़ता है। जब तक तेरी बात को मजबूती देने के लिए तेरे पास पैसा नहीं होगा तब तक तेरी या तेरी बात की कोई इज्जत नहीं होगी। तुझे अचार पापड़ का काम आता है तू वो शुरू कर। शुरू में पैसे कम आयेंगें मगर सुकून होगा। तब तक तेरा काम चल जाएगा। सरकार की बहुत सारी वेबसाइट्स है तू किसी भी इंटरनेट कैफे से खुद को रजिस्टर कर सकती है।"

"नहीं दीदी! हम नहीं कर पाएंगे। हम ने तो आज तक अकेले कभी बाज़ार तक नहीं की। यह सब कैसे करेंगे दीदी।" विमला ने मोहिनी से रोते रोते कहा।

"आराम से सोचना और फिर बताना। अब तू जा वरना लेट हो जाएगी।" मोहिनी ने चाय का कप रखते हुए कहा।

"दीदी, मिठाई का डिब्बा" विमला ने याद दिलाया।

"कोई डिब्बा नहीं था। मुझे बस बात करनी थी।"

" सुन?" विमला जाने लगी तो मोहिनी ने टोकते हुए बोला।

" हां, दीदी।" विमला मुढ़ते हुए बोली।

"यह लोकल पुलिस थाने का नंबर है और यह मेरा नंबर है। अगर कभी ज़रूरत पड़े तो फोन कर लेना।" मोहिनी एक काग़ज़ पर कुछ लिखते हुए बोली।

"दीदी, हम पोलिस के चक्कर नहीं लगा पाएंगे। कोर्ट कचहरी के पैसे कहां से लाएंगे। यह हमें मत दो।"

"तू रख ले। समय का कोई पता नहीं है। तू अपनी ना सही, बच्चियों के लिए रख ले।" अनमने मन से विमला ने वो काग़ज़ का टुकड़ा रख लिया।

मोहिनी चाय के कप सिंक के पास रख कर सोचने लगती है घरेलू हिंसा का दंश झेलती हुए महिलाएं क्यों इतना हार जाती है। उन्हें तो यह यकीन दिला पाना भी मुश्किल होता है कि उन्हें उस धधकती आग से बचाया भी जा सकता है। उसे खुद भी कहां लगा था, वो कभी उस दुनिया से निकल पाएगी। उसे आज भी याद है, उस दिन अस्पताल में क्या हुआ था।

~~

माँ

तीन दिन बेहोश रहने के बाद मोहिनी को होश आया। यह डॉक्टर भी ना, शारीरिक चोट के लिए इतनी दवाएं दे रहे हैं जबकि असल चोट तो मोहिनी की उम्मीदों को लगी थी, मां बनने की उम्मीद, अपने बच्चे को हर मुसीबत से बचाने की उम्मीद। मगर उसकी तो उन्होंने कोई दवा दी ही नहीं और फिर सोच रहे हैं कि मोहिनी ठीक क्यों नहीं हो रही। विज्ञान की इतनी तरक्की के बाद भी उतनी तरक्की नहीं हो सकी थी जितनी मोहिनी की तकलीफ कम करने के लिए ज़रूरी थी। दोपहर में जब रीमा उसे खाना खिला रही थी तब उसने दबी आवाज़ में साहस जुटा कर पूछ ही लिया।

"रीमा, प्रशांत?" खाने का निवाला लेते हुए मोहिनी ने कहा।

"एक दिन आया था मुझे हिदायत देने कि मैंने किसी को कुछ बताया तो वो किस तरह से मुझे बर्बाद कर सकता है।" रीमा ने तंज कसते हुए कहा।

"और कोई?" मोहिनी ने पूछा।

"तेरी मम्मी दोपहर की ट्रेन से आ रही हैं। शगुन उन्हें लेने स्टेशन गया है।" रीमा ने पास में लगी सिंक में हाथ धोते बोला।

"रीमा, जो तू ना होती तो मैं तो उसी दिन मर जाती।"

"मोहिनी यह सब कब तक झेलेगी? तू जब तक सहेगी वो तुझे सताएगा। इससे बेहतर है तू अलग हो जा, यहां रह.."

"कोई ज़रूरत नहीं है मोना तुझे इसकी बात सुनने की। अरे इतनी ज़रा सी बात में कोई घर छोड़ देता है?" लीला कमरे में दाखिल होते हुए बोली।

"आंटी जी, नमस्ते! मैं रीमा, मोहिनी की सहेली।" रीमा ने बेड से उठते हुए कहा।

"तो सहेली बन कर रह। दुश्मन मत बन।" लीला ने मोहिनी के गले लगते हुए कहा।

"आंटी क्या आप इसी हाल में आप इसे छोड़ कर गई थी? जो मर्द एक बार औरत की इज्जत करना भूल चुका है उसे आप दोबारा वो पाठ याद नहीं करा सकती। बीवी पर हाथ उठाना शेर के शिकार जैसा है, एक बार खून का स्वाद आ चुका है अब वो भुलाने से भी नहीं भूलेगा।" रीमा ने लीला को समझाना।

"अगर मर्द का गुस्सा तेज़ है तो औरत को शांत रह जाना चाहिए। घर तो औरत संभालती है। बराबर तो आपस में हमारे दो हाथ भी नहीं है। अगर हर कोई एक दूसरे से बराबरी करेगा तो उसे घर नहीं दंगल कहेंगे। कुदरत ने औरत को इस लिए शालीन और बुद्धिमान बनाया है कि वो नदी के समान चाल बदल सके, कभी नर्म कभी गर्म। प्रशान्त आज नाराज़ है कल मान जायगा। बाप बनने के बाद सब बदल जाते हैं।"

"मां मेरा बच्चा!" मोहिनी बाप का नाम सुनकर रोने लगी। "प्रशान्त ने उसे मारा। शादी के समय तुम कह रही थी शादी के बाद लड़के बदल जाते है, प्रशांत नहीं बदला। मां मुझे ले चलो अपने साथ। प्रशांत मार डालेगा मुझे ऐसे।" मोहिनी लीला से गले लगकर रोने लगी।

"ऐसी हालत में तुझे ले कर जाऊंगी तो रिश्तेदार चार बातें करेंगे। तेरी बहेनों के

ससुराल में यह खबर जाएगी तो तेरी बहनों की क्या इज्जत रह जाएगी। मैं तेरे हाथ जोड़ती हूं हमें तेरे परिवार वाले होने की इतनी बड़ी सजा मत दे मोना। तेरी दादी ज़हर खा लेगी और तेरे बाबा कहीं मुंह दिखाने के लायक नहीं रहेंगे। जो बीत गई वो बात गई। लोग बदल जाते है। हमारे यहां लड़की की डोली जाती है और फिर अर्थी आती है। शगुन, तू फोन लगा दामाद जी को, मैं बात करुंगी।"

"आंटी, सच यह है कि लोग नहीं बदलते। कुछ वक्त के बाद वो बस वो अपनी फितरत को छुपाना सीख जाते हैं।" शगुन प्रशांत से बात करने के लिए बाहर चला गया। पंद्रह मिनट बाद शगुन ने बताया कि प्रशांत दस मिनट के लिए आने को राज़ी हुआ।

रिया अपने केबिन में बैठी है। कुछ रिपोर्ट पढ़ रही है। वो बाहर निकल रही होती है कि अमन सामने पड़ी कुर्सी पर आ धमकता है।

"रिया! आठ बजे सियाही बिस्ट्रो? मैं तुम्हें लेने आजाऊंगा।" कह कर अमन उसे पैरों पर बैठा लेता है।

इससे पहले रिया कुछ कह पाती, पीछे प्रशांत खड़ा था।

"यह क्या बेहूदगी है डॉक्टर रिया? इज्जत, शर्म यह तो तुम बहनों ने बेच खाए हैं। और यह लड़का? इसे बिल्कुल भी शर्म नहीं है?" प्रशांत खिसियाते हुए बोला। इससे पहले रिया कुछ कहती अमन ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"तुमने बाहर बोर्ड पढ़ा? उस पर डॉक्टर रिया लिखा था और गेट के बाहर संजीवनी हॉस्पिटल लिखा था। संजीवनी यानी अमन संजीवनी शेखावत। यह तुम्हारे चाचा का बगीचा नहीं है कि मुंह उठाया और चले आए। रिया की वजह से तुम यहां खड़े हो वरना मैं कब का पुलिस को खबर कर चुका होता और तुम जेल में होते।" कह कर अमन चलने लगा कि अचानक मुड़ कर बोला "रिया, मैं सात बजे आऊंगा। पता नहीं कहां कहां से आ जाते है जाहिल मूड खराब करने।"

"कहों कैसे आना तुम्हारा प्रशांत?" रिया ने अपनी हंसी छुपाते हुए प्रशांत से पूछा।

"मैं मोहिनी के बारे में पता करना चाहता था कि वो दुबारा मां बन सकती है ना?"

"तुम पिछले आठ दिन में पहली बार मुझसे मिल रहे हो और मोहिनी की तबीयत जान ने की जगह तुम्हें यह पूछना है? उसके ज़ख्म काफी अन्दर तक चोट दे गए थे, उसके मां बन ने के चांस अब कम हो गए है। यदि वो मां बनी भी तो काफी जटिल समस्याएं आ सकती है। मुझे देर हो रही है।" अपनी कुर्सी से उठते हुए रिया बोली।

शाम के साढ़े पांच बज रहे है। लीला प्रशांत का इंतजार कर रही है। दरवाज़े के बाहर कदमों की दस्तक हर बार मोहिनी के डर को बढ़ा रही है।

"बताइए क्या बात करनी थी आपको?" प्रशान्त ने घुसते ही लीला पर सीधा प्रहार किया।

"दामाद जी नमस्ते! चाय वगैरह कुछ लेंगे आप?" लीला ने माहौल को नरम करते हुए कहा।

"जी नहीं, शुक्रिया!"

"डॉक्टर कह रहे है अब मोना घर जा सकती है। आप कल ही इसकी छुट्टी करा लीजिए और घर ले जाइए।"

"रिया ने बताया कि अब यह मां नहीं बन सकती। क्यूं ले जाऊं मैं इस बांझ को अब घर?" प्रशान्त ने गुस्से से मोहिनी को देखते हुए कहा।

"अरे दामाद जी। डॉक्टर तो कहते रहते हैं। मुझे भी यही कहा था आज देखो मेरे पांच बच्चे हैं। आप इसे माफ़ कर दीजिए और घर ले जाइए।"

"ले जाऊंगा लेकिन मेरी कुछ शर्त है। यह रीमा से अब कभी बात नहीं करेगी। दूसरी यह कि मुझे करोल बाग़ में एक घर पसंद है। मैं चाहता हूं आप उसकी रजिस्ट्री करा दे।" प्रशान्त ने कहा।

"कभी बात नहीं करेगी यह रीमा से। वो रीमा तो मुझे भी नहीं पसंद है। घर की रजिस्ट्री कल ही इसका भाई करा देगा।"

और इस तरीके से हर कदम पर बिकने वाली औरत एक बार फिर बिक गई।

~~

समोसे

शाम को मोहिनी रवि के घर उसकी ताई जी से मिलने गई। वहां सोफे पर रवि, ताई जी, अनु चाय और समोसे खा रहे थे।

"ताई जी, यह मोहिनी है। मोना यह अनु है।" रवि ने परिचय कराते हुए कहा।

"आओ! मोहिनी, तुमसे तो मैं कब से मिलना चाहती थी।" ताई जी ने कहा।

"नमस्ते आंटी जी, कैसी हो अनु?"

"दीदी चाय!" विमला ने कप रखते हुए कहा। मोहिनी ने गौर किया कि विमला की आवाज़ में अलग आत्मविश्वास चमक रहा था।

"अरे बेटा। देखो ना कितने अच्छे अच्छे रिश्ते आए हैं रवि के लिए पर यह सब मना किए देता है। तुम ही समझाओ। तुम तो दोस्त हो शायद तुम्हारी सुन ले।" ताई ने कहा।

"यह मीरा है। रेलवे में इंजीनियर है।" अनु फोटो दिखाते हुए बोली।

"अनु चुप जा। मोहिनी तुम्हें यह सुनने की कोई जरूरत नहीं है।" रवि ने उसे समोसे की प्लेट देते हुए कहा।

"रवि पसंद कर लो वरना एक दो साल में जो बाल सफेद हो गए तब कोई नहीं मिलेगी" मोहिनी ने कहा। जवाब में रवि ने आंखे नचाई और बाकी लोगों ने हंस कर मज़ाक बनाया।

"अच्छा आंटी जी मैं चलती हूं।" मोहिनी ने विदा लेते हुए कहा।

मोहिनी लिफ्ट का इंतजार कर रही थी कि पीछे से किसी की आवाज़ आई।

"दीदी रुको" मुड़कर देखा तो विमला थी।" दीदी, शुक्रिया! तुमने मुझे उस दिन हिम्मत दी तो मैं अपने पति के खिलाफ खड़ी हो पाई।"

"अच्छा? ऐसा क्या हुआ जो बकरी शेरनी बन गई?" मोहिनी ने कहा।

"दीदी बात मुझ तक थी तो मैं झेल रही थी मगर वो मेरी बच्ची को मारने दौड़ा। मैंने भाग कर पुलिस को फोन कर दिया। तुमने ही तो नंबर दिया था। मुझे पुलिस के चक्कर भी नहीं लगाने पड़ेंगे। मेरा केस सरकारी वकील लड़ेगा। दीदी वो तुम रजिस्टर को कुछ बता रही थी, मुझे वो करना है। मेरी मदद करदो, दीदी।"

"ठीक है। कल शाम को मेरे घर अपने हाथ के बुने हुए स्वेटर और कुछ नमूने ले कर आना, फोटो के लिए।" इतने में लिफ्ट आ गई।

मोहिनी खाना खा कर बर्तन रख रही थी कि घंटी बजी।

"रवि, सांस लिया करो।"

"क्या कर रही हो तुम?" रवि ने घुसते हुए पूछा।

"तुम यह पूछने के लिए रात में नौ बजे मेरे घर आए हो?" मोहिनी ने पानी पीते हुए कहा। जैसे ही वो मुड़ी, उसके होश उड़ गए। रवि घुटने पर बैठा था। उसके हाथ ने चमकती हुई अंगूठी थी।

"रवि, प्लीज उठो। यह क्या कर रहे हो तुम?" मोहिनी कुछ गुस्से में बोली।

"मोहिनी, मुझे तुमसे प्यार हो गया है। तुम्हारी बातों से, तुम्हारी समझदारी से,

तुम्हारी नज़रों से। तुम्हारी चाय के बिना शाम पूरी नहीं होती। मोहिनी मैं बस तुम्हारा दोस्त नहीं बना रहना चाहता। मोना, मुझसे शादी कर लो।"

"रवि यह नहीं हो सकता। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं, चले जाओ और इस ख्याल को अपने दिल में फिर कभी आने ना देना।"

"मोना, कह दो तुम्हें मुझसे प्यार नहीं है और मैं चला जाऊंगा। कह दो मुझ पर किसी और लड़की की निगाहें तुम्हें बैचेन नहीं करती।"

"प्यार करना और उस प्यार को पाने की चाहत रखना दो अलग अलग चीज है। मैं तुम्हें प्यार करती हूं मगर तुम्हें पाने की चाहत नहीं रखती रवि, ना कभी रख सकूंगी। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता तुम्हें कौन देख रहा है या तुम किसे देख रहे हो। खुद को धोखा मत दो।" कह कर मोहिनी डायनिंग टेबल पर बैठ गई।

मोहिनी की बातें सुनकर रवि कुछ हताश हो गया और बिना मोहिनी से नज़रे मिलाए चला गया।

प्यार? जानता ही क्या था रवि इस शब्द के बारे में? मोहिनी के घावों को? उसके अतीत को? वो कुछ भी तो नहीं जानता था। क्या किसी के घावों को बिना कुरेदे भी उन्हें प्यार किया जा सकता था? मोहिनी को तो इन सवालों के जवाब पता ही नहीं थे।

~~

ससुराल

ऐसा क्यों होता है अक्सर जिन घावों को भरने के लिए हम वक़्त का आसरा लेते हैं, उनके दर्द से हम कभी खुद को मुक्त नहीं कर पाते। गाहे बगाहे हवा का उन पर छू कर गुजरना भी हमें तकलीफ देता है। रवि का शादी को प्रस्ताव मोहिनी को फिर पुरानी चोट याद दिला गया।

मोहिनी को ससुराल में रहते हुए अब तीन महीने होने को आए थे। इन तीन महीनों में मोहिनी की इज्जत एक चौथाई ही बची थी। उमा को छोड़ कर कोई भी मोहिनी पर हाथ उठा देता था। सारे तानों के साथ बांझपन का ताना भी उसकी तारीफ में कहा जाने लगा था।

जून का महीना चल रहा है। मोहिनी किचन में रोटी सेंक रही है। उमा परोस रही है। कल रात की सब्जी में मोहिनी ने मिर्च तेज़ कर दी थी इस लिए सजा के रूप में मोहिनी का आज का खाना बंद है।

"मां, मोहिनी बेहोश हो गई है। डॉक्टर को बुलाओ।" मोहिनी को ज़मीन पर गिरा देख के उमा चीखी।

"काम की ना काज की, दुश्मन अनाज की।" प्रशांत के पापा ने रोटी का निवाला लेते हुए कहा।

प्रशांत का छोटा भाई ऋषभ डॉक्टर को ले कर आया था। उसने सारे चेक अप करने के बाद प्रशांत को बुलाया। डॉक्टर ने प्रशांत को मोहिनी के मां बनने की खबर सुनाई। यह बच्चा मोहिनी के लिए उम्मीद ही नहीं सुकून भी लाया था। मोहिनी के ससुराल में खानदान का चिराग आने की खबर से माहौल में बदलाव आ चुका था। प्रशांत दिल्ली जा चुका था। ज़रा सी बातों पर उसका खाना बंद नहीं किया जाता था। मोहिनी का आत्मसम्मान इतना गिर चुका था कि उसे गाली गलौज में शांति मिल जाती थी यह सोच कर कि कोई उसे मारेगा नहीं। खैर, देखते देखते आठ महीने गुजर गए। मोहिनी अस्पताल में भर्ती हो गई। रिया के कहे अनुसार ऑपरेशन में जटिलताएं हो गई।

"प्रशांत, मैं बच्चे या मोहिनी में से किसी एक को ही बचा सकता हूं।" डॉक्टर ने प्रशांत से पूछा।

"अरे इसमें सोचना क्या है, आप हमारे पोते को बचाइए।" प्रशांत की मां ने प्रशांत की जगह जवाब दिया।

"डॉक्टर साहब! मां ठीक कहती है।" प्रशांत ने फार्म भरते हुए कहा।

मोहिनी की किस्मत बुलंद थी कि वो और उसका बच्चा दोनों बच गए। एक तरफ जहां मोहिनी के ससुराल वाले चांद सा चिराग चाहते थे वहीं उनके घर को चांदनी ने आबाद किया। मोहिनी को लड़की हुई। प्रशांत की मां तो ऐसे रोई जैसे लड़की आई नहीं गई थी। कोई खुश ना हुआ, उमा भी नहीं।

"भाभी, इससे बेहतर होता तुम्हें लड़का होता, खुल कर तो जीता। यह बेचारी घुट घुट के रहेगी। अपने सपने देखेगी सिर्फ उनके टूटने के लिए। भाभी तुमसे मिलने तुम्हारी सहेली आयी है।" कहकर उमा चली गई।

"मोना! कैसी है तू? मुझे पता चला तुझे लड़की हुई है तो रहा ना गया।" रीमा ने मोहिनी को गले लगाते हुए कहा। "देखो तो हमारी नन्ही परी कितनी सुंदर है" रीमा ने बच्ची को गले लगाते हुए कहा।

"तेरे अलावा कोई ना कह रहा।" मोहिनी ने कुछ रुआंसे स्वर ने कहा।

"मोहिनी जिस बच्ची के पैदा होने पर तेरे ससुराल वाले मातम मना रहे है वो बेचारी बड़े होकर कैसे जियेगी, यह तू मुझसे बेहतर जानती है। अपने लिए ना सही अपनी बच्ची के लिए सोच, आवाज़ उठा।"

रीमा की बातों ने मोहिनी को हिला कर रख दिया था। अब तक वो किसी की बीवी थी, बहू थी, बेटी थी तो वो कमज़ोर थी मगर अब वो एक मां थी और मां से ज्यादा विकराल कोई नहीं होता। काली मां के आगे तो महादेव को भी झुकना पड़ा था।

~~

हादसा

अगले पंद्रह दिन तक मोहिनी और रवि का कोई सामना नहीं हुआ। दरवाज़े की घंटी से मोहिनी को उम्मीद हुई कि शायद रवि हो। विमला के चेहरे ने उससे वो खुशी तुरन्त छीन ली।

"दीदी, मिठाई" विमला ने मिठाई का डिब्बा आगे करते हुए कहा।

"क्यों" मोहिनी ने कुछ बुझे मन से पूछा।

"वो आपने जो अचार का काम सुझाया था, आज ही मुझे दस हज़ार का ऑर्डर मिला है और तीन हज़ार रूपए एडवांस मिले हैं। दीदी तुमने मेरी लड़कियों की ज़िंदगी बदल दी।" विमला ने खुशी से उछलते हुए कहा।

"अरे वाह।" मोहिनी ने खुश होकर कहा। जब विमला चलने लगी तो मोहिनी ने उससे पूछ ही लिया।

"रवि कहां रहता है? दिखता नहीं आजकल?"

"दीदी जब से उनकी ताई जी और अनु की मौत हुई है वो खोए खोए से रहते है। ना कुछ खाते हैं ना.." इससे पहले विमला कुछ और कह पाती उसने देखा मोहिनी रोती हुई सीढ़ियों से ऊपर मंजिल पर भागी जा रही है। मोहिनी ने घंटी बजाई तो रवि निकला।

"रवि" कहकर वो उसके गले लग गई।

मोहिनी की गर्माहट ने रवि के मन की सारी दीवारों को मोम की तरह पिघला दिया। कौन कहता है मर्द रोते नहीं, अपनापन मिलने पर तो पत्थर भी पिघल जाते हैं। वहां खड़े होकर दोनों कितनी देर रोए, यह तो नहीं पता मगर जब होश आया तो मोहिनी सोफे पर बैठी थी और रवि का सर उसकी गोद में था और उसके आंसू मोहिनी का कुर्ता भीगा चुके थे।

"रवि यह सब कैसे हुआ?" मोहिनी ने रवि के बालों में हाथ फेरते हुए कहा।

"मुझे बस यह याद है कि मुझे एयरपोर्ट से किसी का फोन आया कि ताई जी का विमान क्रैश हो गया है और मुझे लाश की पहचान करने के लिए आना होगा। उसके बाद मैं कहा गया, मैंने क्या किया कुछ नहीं याद। मैं भूल जाना चाहता हूं कि मैं फिर से अनाथ हो गया हूं। मैं फिर इस दुनिया में जीने का मकसद खो चुका हूं।"

"काश मैं तुम्हारे दर्द काम कर पाती।" मोहिनी रवि के बालों में हाथ फेरते हुए बोली।

"मुझे बचपन नहीं याद लेकिन जब से होश संभाला मनोहर अनाथ आश्रम याद है। उसका मैनेजर सभी बच्चों को यौन शौषण करता था। हर महीने के दो दिन सबकी बारी आती थी। एक दिन वहां छापा पड़ा और वो रैकेट पकड़ा गया। वहां आए ऑफिसर ने एक आठ साल का लड़का देखा जो डरा सहमा और शायद कुपोषित था। उसने उसे गोद ले लिया। कुछ दिन तो सब ठीक चला लेकिन दो महीने बाद कब गोद लिया बेटा नौकर बन गया पता नहीं चला। उसे हर गलती की अलग सजा मिलती थी। सिगरेट की ट्रे टेढ़ी रखने पर सिगरेट से जलाना, सुबह देर से उठने पिटाई वगैरह वगैरह। एक दिन उस ऑफिसर के बड़े भाई आए और उनसे उस आठ साल के लड़के की पीठ देखी नहीं गई और वो उसे अपने

साथ ले आए। किस्मत देखो मोहिनी रास्ते में उनका ऐक्सिडेंट हो गया और वो गुजर गए मगर उनकी बीवी ने उस लड़के को अपने सगे लड़के जैसे पाला और उसे सरकारी अफसर बनाया।" रवि अब मोहिनी की गोद से उठ कर सोफे पर बैठ चुका था मगर उसके आंसू बह रहे थे।

कुछ अपनों से बिछड़ने का दुःख जाने अनजाने हमारे जीवन की कहानी में वो रावण बन कर आता है जो कई बार हमारे मन के राम का हनुमान जैसे भक्ति से मिलन भी करा देता है। मोहिनी आज फिर भावनाओं के सैलाब पर शब्दों की कश्ती उतारने में विफल थी।

"मोहिनी मैं सब कुछ खो चुका हूं, तुम्हें नहीं खो सकता।" कहकर रवि ने अपने होठ मोहिनी के होंठो पर रख दिए। भावनाओं के साथ आंसुओं का नमकीन स्वाद मोहिनी को मदहोश कर गया। मोहिनी बिना कुछ सोचे समझे रवि के होंठो के स्वाद में खोने लगी जैसे कोई मीठा नशा चढ़ रहा हो कि मोहिनी के दिमाग ने उसे हिलाया।

"यह ग़लत है रवि" मोहिनी खुद को रवि से दूर करते हुए बोली।

"क्यों मोना? यह सही क्यों नहीं हो सकता।" रवि ने उसका हाथ पकड़ कर उसे रोकना चाहा।

"मैं वो मूर्ति नहीं हूं, रवि जिसे लोग मंदिर में रख कर पूजते हैं बल्कि मैं वो मूर्ति हूं जो टूट गई है और उसे लोगों ने मंदिर से निकाल कर फेंक दिया है।" इतना कहते ही मोहिनी ने अपनी शाल कंधे से हटा दी। उसके कंधे पर जले हुए निशान थे, शायद गरम इस्त्री के थे। मोहिनी ने कुर्ती की बांह ऊपर की तो वहां बेल्ट के निशान थे, गहरे और भद्दे। उन्हें यदि कोई छू ले, तो हो सकता था मोहिनी को अब भी दर्द होता।

"यह तुम्हारा बीता कल था मोहिनी, मैं तुम्हारा आने वाला कल बनना चाहता हूं। मुझे उस बीते हुए कल की इतनी बढ़ी सजा मत दो मोहिनी जिसमें मैं था ही नहीं।" कहकर उसने पीछे से मोहिनी के कंधे के निशानों को चूम लिया। मोहिनी अब रोने लगी। वो लोहे का कमरा जिसमें मोहिनी ने खुद को सालों से कैद कर रखा था उसकी सलाखें अब चटकने लगी थी। मोहिनी को पता था कि अगर आज उसने रवि से नज़रें मिलाई तो वो कमरा तबाह हो जाएगा। मोहिनी ने अपने अंदर की बची खुची हिम्मत जुटाई और सोफे से खड़ी हुई।

"माफ़ कर दो रवि पर मैं यह नहीं कर सकती।"

"टेबल पर मेरा ट्रांसफर ऑर्डर है। आज तुम मुझसे नज़रें चुरा कर गई तो मैं कल ही इसे स्वीकार कर के यहां से चला जाऊंगा, मोना। मुड़ कर भी ना देखूंगा।" रवि ने उसका हाथ नहीं छोड़ा।

इतना सुनते ही मोहिनी के कदम बर्फ बन गए। वहीं हुआ जिसका डर था, उसका कमरा टूट गया। मोहिनी सोफे पर बैठ गई। रवि ने मोहिनी से नज़रें मिलाते हुए कहा, "अब कहो फर्क नहीं है।"

"रवि" मोहिनी ने आखिरकार रवि से नज़रें मिलाई।

"तो मुझसे भाग क्यों रही हो, मोना"

जब रवि को जवाब मोहिनी के शब्दों में नहीं मिला तो वो खुद ही जवाब लेने के

आगे बढ़ा। उसने मोहिनी के माथे पर प्यार भरा नजराना दिया, फिर गाल पर और अब बारी होंठों की थी। अबकी बार मोहिनी पीछे नहीं हटी बल्कि पूरे जोश से उसके होठों को चखा। मोहिनी के हाथ खुद रवि के बालों ने जाकर फंस गए और रवि के हाथ मोहिनी की कमर पर अटक गए। मोहिनी की सांसे तेज़ हो गई कि रवि हट गया। अचानक हुई इस रुकावट ने मोहिनी को कुछ निराश सा छोड़ दिया कि तभी उसने देखा रवि उसे गोद में उठा कर कमरे की तरफ ले जा रहा है।

~~

अज़नबी

रवि ने मोहिनी को पलंग पर लेटा दिया। रवि के होंठ अब मोहिनी की गर्दन पर आ गए थे। रवि की मीठी छुअन मोहिनी को पागल करने के लिए काफी थी। रवि के हाथ कमर से नीचे बढ़ने लगे कि मोहिनी ने उसे रोक दिया।

"मैं उम्मीद करती हूं तुमने कुछ ज्यादा सपने नहीं देखे हैं।" मोहिनी ने कुर्ता उतार दिया। काली ब्रा में मोहिनी के स्तन जवानी की हर परिभाषा पर खरे थे मगर मोहिनी की कमर पर कई गहरे चोट के निशान थे जिन्हें देखकर लगता था मानो किसी ने जान बूझ कर चांद पर दाग लगाया है। मोहिनी की नाभि के नीचे ऑपरेशन के निशान भी थे।

"मोना! मेरा कोई भी सपना तुम्हारी खूबसूरती से इन्साफ नहीं कर पाता।" रवि मोहिनी के निशान छूने लगा। उसके बाद क्या हुआ उसका होश ना मोहिनी को था ना रवि को, मोहिनी को बस यह याद रहा कि रवि के होंठो ने मोहिनी के उन हिस्सों को भी छुआ जिनके होने का एहसास मोहिनी को आज ही हुआ था।

सुबह के सात बज रहे हैं। धूप की कुछ किरणें पर्दो से बच कर मोहिनी के मुंह पर आ रही है। मोहिनी के बदन को कपड़ों के नाम पर बस लंबे बाल ढंक रहे है और पैरों पर सफेद चादर कुछ सिलवटों के साथ पड़ी है। ज़मीन पर बिखरे कपड़े रात की कहानी बयां कर रहे हैं। मोहिनी की आंखें खुली तो देखा रवि कुर्सी पर बैठा मुस्कुरा रहा है।

"कॉफी" उसने नाईट लैंप के पास रखे कप की तरफ इशारा करते हुए कहा। मोहिनी ने मुस्कुराते हुए कप उठा लिया।

"तुम्हें याद है मोना मैंने तुम्हें पहली बार कहां देखा था?" रवि ने कॉफी पीते हुए पूछा।

"लिफ्ट में, तुम मेरी किताब के बारे में पूछ रहे थे।" मोहिनी ने रवि की आंखों में देखते हुए जवाब दिया।

"नहीं! उस दिन से छह महीने पहले तुम नई नई बिल्डिंग में आई थी और सिक्योरिटी गार्ड के पास पार्किंग की जगह बुक कर रही थी। तुमने हल्के पीले रंग का सूट पहना था। तुम्हारे बाल नीली रंग की रबर में बंधे थे। मैं अपना दिल वहीं तुमसे हार गया था मोहिनी। तुम्हें याद है तुमने उस दिन अपनी एक पायल खो दी थी?" रवि ने मोहिनी से कहा।

"हां रवि, मुझे याद है। कितना ढूंढा मैंने, कहीं ना मिली मुझे वो"

"नाईट स्टैंड की पहली ड्रॉअर खोलो" मोहिनी ने खोला तो देखा उसने मोहिनी की तीन साल पुरानी पायल और उसका कान का कुण्डल रखा था।

"अगले छह महीने मैं तुमसे बात करने के लिए अलग अलग तरकीब बैठाता रहा। हर बार तुम्हारे साथ लिफ्ट में आता कि किसी दिन तो तुम निर्मला बंद करके इधर उधर देखोगी मगर मैं प्रेमचंद को कभी मात दे ही नहीं पाया। फिर एक दिन तुम्हारी किताब गिर गई और मुझे मौका मिल गया।" रवि उसके पास पलंग पर आकर बैठ गया।

"रवि, मैं तुम्हें कुछ बताना चाहती हूं। आज से पहले मैं कभी यह कहने की हिम्मत नहीं कर पाई।" रवि ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला लेकिन मोहिनी ने उसके होंठो पर

उंगलियां रख कर उसे चुप कर दिया।

"कुछ साल पहले मेरी शादी प्रशांत से हुई थी। यह(चोट के निशान दिखाते हुए) उसी की निशानी है। 4 साल बाद प्रशांत के साथ मेरी एक बेटी हुई। मां बनने के बाद मैं बदल गई। मैंने प्रशांत के खिलाफ आवाज उठानी शुरू कर दी। मैंने सोच लिया था कि मैं अपनी बेटी उस माहौल में बढ़ा नहीं कर सकती। मैंने नौकरी करके वहां से अलग होने का निश्चय किया। एक दिन मैं एग्जाम देने गई और अपनी बच्ची प्रशांत के भरोसे छोड़ गई। तीन घंटे मेरी बच्ची बारिश में भीगती रही। अस्पताल जाकर पता चला कि उसे ब्लड इन्फेक्शन हो गया था और उसे एबी नेगेटिव ब्लड की ज़रूरत थी जो प्रशांत का था।" इतना कहते ही मोहिनी रोने लगी जैसे बरसों का बांध टूट गया हो और पानी सारे बंधन तोड़ कर निकला हो। रवि ने उसे पानी का ग्लास दिया।

"मैं रात भर प्रशांत को फोन लगाती रही मगर वो ना आया। आता कहां से, रात भर माशूका की बाहों में था। मुझे छोड़ कर सबको पता था, उमा को भी। मैं सालों प्रशांत के ज़ुल्म यह सोच कर सहती रही कि एक दिन वो बदल जायगा मगर वो मुझे धोखा देता रहा। मुझे रीमा अपने साथ दिल्ली ले गई। मैंने पढ़ाई की और बैंक का एग्जाम पास कर लिया। मेरे अपने घरवालों ने मुझसे रिश्ते ख़तम कर दिए क्यूंकि ज़िंदगी में पहली बार मैं अपने लिए खड़ी हुई थी। काश! मैं वो हिम्मत पहले करती तो मेरी बेटी ज़िंदा होती।" मोहिनी रोने लगी। रवि ने मोहिनी को रोने से नहीं रोका। उसने मोहिनी को सीने से तब तक लगाए रखा जब तक मोहिनी के आंसू सूख नहीं गए।

"मोहिनी मैं तुम्हारे कल में जाकर उसे बदल नहीं सकता मगर यह जरूर कह सकता हूं तुम सशक्त नारी की असली परिभाषा हो।"

अचानक दरवाज़े की घंटी बजी। रवि दरवाज़ा खोलने के लिए उठता है।

"तुम?" यह वही रहस्यमय शख्स था जिसे रवि ने ब्रगर किंग में काले कपड़ों में देखा था।

"प्रशांत ?"

रवि ने पीछे मुड़ कर देखा तो उसकी शर्ट में मोहिनी खड़ी थी।

~~